दैनिक

कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

वर्ष 6, अंक 325 | भोपाल, शुक्रवार 8 मई, 2026 | ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष, छष्ठी 2083 | मूल्य 2 रुपए

'तीस्ता प्रोजेक्ट में हमारी मदद करो' ... पेज 5

महादेव शिव को मिला वो श्राप,... पेज 7

हंतावायरस से प्रभावित जहाज पर दो भारतीय क्रू, हालात की जानकारी नहीं, WHO ने 12 देशों को किया अलर्ट

दैनिक कारखाने का सफर। केप वर्डे

घातक वायरस के प्रकोप की चपेट में आए एक जहाज से हंतावायरस से संक्रमित दो लोगों और एक अन्य संदिग्ध व्यक्ति को सुरक्षित निकाल लिया गया है और अब यह जहाज कम से कम 150 लोगों को लेकर केप वर्ड से स्पेन के कैनरी द्वीप समूह की ओर बढ़ गया है। संयुक्त राष्ट्र स्वास्थ्य एजेंसी ने यह जानकारी दी। जानकारी के मुताबिक, इस जहाज के क्रू में दो भारतीय नागरिक भी सवार हैं। हालांकि, उनमें से किसी के भी हालात की जानकारी नहीं है। जहाज के फुटेज में सुरक्षात्मक पोशाक पहने स्वास्थ्यकर्मी ब्रिटेन के चिकित्सक सहित तीन मरीजों को निकालते हुए दिखाई दिए। बुधवार शाम को दो मरीज एम्स्टर्डम हवाई अड्डे पर पहुंचे और उन्हें अलग-अलग अस्पतालों में ले जाया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, तीन लोगों की मौत हो गई है और एक शव जहाज पर ही है। संक्रमण के आठ संदिग्ध मामलों में से पांच में संक्रमण की पुष्टि हो गई है। हंतावायरस एक गंभीर और जानलेवा वायरस है, जो मुख्य रूप से चूहों से इंसानों में फैलता है। यह कोई नया वायरस नहीं है लेकिन इसके लक्षण और गंभीरता इसे खतरनाक बनाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार यह वायरस संक्रमित चूहों के पेशाब, लार या मल के संपर्क में आने से फैलता है। चूहों के मल-मूत्र के सूखने पर उसके कण हवा में मिल जाते हैं और सांस के जरिए इंसान के शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। यह वायरस एक इंसान से दूसरे इंसान में पहुंच सकता है। हालांकि डब्ल्यूएचओ के शीर्ष महामारी विशेषज्ञ ने कहा है कि ऐसा बहुत कम होता है। यूरोप और अफ्रीका के स्वास्थ्य अधिकारी उन लोगों की पहचान करने की कोशिश कर रहे हैं जो उस जहाज से पूर्व में उतरे लोगों के संपर्क में आए होंगे। यह जहाज एक अप्रैल को दक्षिण अमेरिका से अंटार्कटिका और अटलांटिक महासागर के कई दूरस्थ द्वीपों के लिए रवाना हुआ था। बीमारी के कारकों की जांच करने वाले अर्जेंटीना ने क्या कहा इस बीमारी के फैलने के कारणों की जांच कर रहे अर्जेंटीना के दो अधिकारियों ने कहा कि सरकार का ऐसा मानना है कि नीदरलैंड के एक दंपति ने विमान में चढ़ने से पहले उशुआइया शहर में पक्षियों के करतब देखे थे और शायद तभी वह हवा में वायरस की चपेट में आ गए। नीदरलैंड के विदेश मंत्रालय ने बताया कि बुधवार को जहाज से निकाले गए तीन लोगों में नीदरलैंड का एक नागरिक (41), ब्रिटेन का एक नागरिक (56) और जर्मनी का एक नागरिक (65) शामिल है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कहा कि सेनेगल में किए गए परीक्षणों से पुष्टि हुई है कि जहाज से निकाले गए दो लोग हंतावायरस से संक्रमित थे। नीदरलैंड की जहाज संचालक कंपनी 'ओशनवाइड एक्सपेडिशन्स' ने कहा कि इनमें से दो की हालत 'गंभीर' है, वहीं तीसरे व्यक्ति में कोई लक्षण नहीं है लेकिन वह उस जर्मन यात्री के 'करीबी संपर्क में' था, जिसकी दो मई को एमवी होंडियस जहाज पर मौत हो गई थी। डब्ल्यूएचओ ने अब उन 12 देशों को सूचित किया है, जिनके नागरिक यात्रा के दौरान पहले ही दक्षिण अटलांटिक महासागर में स्थित सुदूर ब्रिटिश क्षेत्र सेंट हेलेना में क्रूज जहाज 'एमवी होंडियस' से उतर गए थे। इन 12 देशों में कनाडा, डेनमार्क, जर्मनी, नीदरलैंड्स, न्यूजीलैंड, सेंट किट्स एंड नेविस, सिंगापुर, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, टर्की, यूनाइटेड किंगडम और यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका शामिल हैं। डब्ल्यूएचओ प्रमुख टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयेसस ने जिनेवा में मीडिया ब्रीफिंग के दौरान कहा कि अगर सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े कदम तेजी और सही तरीके से उठाए गए, तो फिलहाल एजेंसी को उम्मीद है कि यह संक्रमण 'सीमित' ही रहेगा।

तमिलनाडु राज्यपाल BJP के एजेंट हैं, विजय के समर्थन में उतरे कपिल सिब्बल बोले-कानून का पालन हो

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव खत्म होने के बाद राज्य में सियासी हलचल जारी है। विधानसभा चुनाव में 108 सीटें जीतकर भी अभिनेता से नेता बने विजय के नेतृत्व वाली टीवीके सरकार नहीं बना पा रही है। कांग्रेस का समर्थन मिलने से टीवीके की सीटें 108 से बढ़कर 112 तो हो जाती हैं, लेकिन बहुमत के लिए 118 के जदुई आंकड़े तक पहुंचने में अभी छह सीट दूर है। टीवीके को सरकार बनाने का न्यौता देने में हो रही देरी पर राज्यसभा सांसद और वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने राज्य के गवर्नर राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर के रवैये पर सवाल उठाए हैं।

राज्यपाल पर साधा निशाना कपिल सिब्बल ने गवर्नर राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर पर निशाना साधते हुए एक्स पोस्ट में लिखा, "तमिलनाडु राज्यपाल BJP के एजेंट हैं ,वे BJP के हितों को साधने के लिए संविधान को रौंद डालते हैं।"

विजय (सबसे बड़ी पार्टी के नेता) को बुलाइए। उन्हें मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाइए। उन्हें सदन के पटल पर अपना बहुमत साबित करने दीजिए। चुनाव के बाद बने गठबंधन को बहुमत न माना जाए। सरकारिया आयोग स्थापित कानून लेकिन सुनता कौन है!"

-सरकारिया आयोग का जिक्र करते हुए कपिल सिब्बल आपको बता दें कि टीवीके के विजय ने मंगलवार को राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर से मुलकात की थी और सरकार बनाने का दावा पेश किया था। लेकिन राज्यपाल ने उन्हें बताया कि पर्याप्त संख्याबल साबित करने के बाद ही पार्टी को सरकार बनाने का न्योता दिया जा सकता है। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव 2026 में टीवीके को 108, एआईएडीएमके को 47, कांग्रेस को 5 सीटें, और डीएमके को 59 मिली हैं। पीएमके को 4 और आईयूएमएल को दो और सीपीआई को भी दो सीटें मिली हैं। बीजेपी ने राज्य में 1 सीट जीती है।

पेट्रोल-डीजल की कीमतें दबाए रख पाना मुश्किल, आईएमएफ ने भारत से की यह अपील

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

चार राज्यों में विधानसभा चुनाव खत्म हो गए हैं। लोगों का ध्यान दोबारा एक बड़ी आर्थिक चिंता की ओर जाने लगा है। वह है ईंधन की कीमतें। ऐसी अटकलें तेल हैं कि पेट्रोल और डीजल की कीमतों में जल्द ही बढ़ोतरी हो सकती हैं। वैसे तो सरकार लगातार इन दावों को खारिज करती रही है। लेकिन, कीमतों पर इस तरह के कंट्रोल को कब तक बनाए रखा जा सकेगा, इस पर अब सवाल उठने लगे हैं। मिडिल ईस्ट में लंबे समय से जारी जियोपॉलिटिकल टेंशन के बावजूद भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमतें स्थिर हैं। इस बीच अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भारत से अपील की है कि वह ग्लोबल वास्तविकताओं के आधार पर ईंधन की कीमतों को तय होने दे। लंबे समय तक इन्हें जबरन दबाए रख पाना मुमकिन नहीं है। क्रूड का बदल चुका है पूरा गणित कच्चे तेल की कीमतें ईरान संकट से पहले लगभग 70 डॉलर के आसपास थीं। अब क्रूड ऑयल की कीमतें 100 डॉलर के पार पहुंच गई हैं। एक समय तो ये 126 डॉलर तक भी चली गई थीं। इस अचानक हुई बढ़ोतरी ने सरकारी तेल मार्केटिंग कंपनियों पर भारी बोझ डाल दिया है। इन कंपनियों ने खुदरा कीमतों को स्थिर बनाए रखने के लिए बढ़ी हुई लागत का बोझ खुद उठाया है। इससे उन्हें लगातार वित्तीय नुकसान हो रहा है। पीटीआई की हालिया रिपोर्ट में सरकारी सूत्रों के हवाले से बताया गया था कि पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी से इनकार नहीं किया जा सकता। इस बीच, सरकारी ईंधन खुदरा विक्रेताओं ने पहले ही कमर्शियल एलपीजी, इंडस्ट्रियल डीजल, 5 किलो वाले एलपीजी सिलेंडर और अंतरराष्ट्रीय एयरलाइनों के लिए जेट ईंधन की कीमतें बढ़ा दी हैं ताकि वे बढ़ती लागत के हिसाब से तय हो सकें। जहां एक ओर कच्चे तेल की कीमतें बढ़ी हुई हैं। वहीं घरेलू एलपीजी की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। हालांकि, कमर्शियल एलपीजी (19 किलो) की कीमत में हाल ही में अचानक 993 रुपये की बढ़ोतरी की गई है। यह इस बात का संकेत है कि कुछ खास क्षेत्रों में कीमतों में बदलाव का सिलसिला पहले ही शुरू हो चुका है। IMF ने मार्केट-ड्रिवन प्राइसिंग पर दिया जोर इन घटनाक्रमों के बीच अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भारत से अपील की कि वह ईंधन की कीमतों को ग्लोबल मार्केट की वास्तविकताओं के अनुरूप तय होने दे। आईएमएफ का तर्क है कि कीमतों को आर्टिफिशियल रूप से कम रखना लंबे समय तक संभव नहीं हो सकता। TOI की रिपोर्ट के अनुसार, NCAER की ओर से आयोजित कार्यक्रम में आईएमएफ के डायरेक्टर (एशिया-प्रशांत) कृष्णा श्रीनिवासन ने कहा, 'सरकार ने तेल पर एक्साइज टैक्स में कटौती की है। उर्वरक पर कुछ सब्सिडी भी दी है। यह कुछ समय तक तो चल सकता है। लेकिन, राजकोषीय गुंजाइश को देखते हुए इसे बहुत लंबे समय तक जारी रखना संभव नहीं है। किसी न किसी मोड़ पर आपको कीमतों को बाजार के संकेतों के अनुसार तय होने देना ही होगा। और यह बात भारत के संदर्भ में भी पूरी तरह सच है।'

ऑपरेशन सिंदूर की पहली बरसी पर जारी डॉक्यूमेंट्री

भारत की सीक्रेट वॉर स्ट्रैटेजी ने पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को कैसे किया तबाह

दैनिक कारखाने का सफर। नई दिल्ली

राजस्थान के जयपुर स्थित साउथ वेस्टर्न कमांड मुख्यालय में 'ऑपरेशन सिंदूर' की पहली वर्षगांठ पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 30 मिनट की स्पेशल डॉक्यूमेंट्री लॉन्च की। इस मौके पर भारतीय सेना के शौर्य, रणनीति और ऑपरेशन की अहम उपलब्धियों को दिखाया गया। कार्यक्रम के दौरान सेना के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे और ऑपरेशन सिंदूर को देश की सैन्य क्षमता और साहस का प्रतीक बताया गया। डॉक्यूमेंट्री के मुताबिक, भारत ने किसी भी सैन्य कार्रवाई से पहले पाकिस्तान के महत्वपूर्ण सिस्टम पर नजर रखने के लिए साइबर एसेट्स को सक्रिय किया। इसके साथ ही ISRO की मदद से स्पेस आधारित संसाधनों को दोबारा तैनात किया गया ताकि पाकिस्तान के कई संवेदनशील इलाकों की लगातार निगरानी की जा सके। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने भी संयुक्त रूप से काम करते हुए रियल टाइम इंटेलिजेंस शेयर की, जिससे ऑपरेशन की तैयारी बेहद सटीक तरीके से की गई। डॉक्यूमेंट्री में ऑपरेशन सिंदूर को पिछले 50 वर्षों में भारतीय सेना का सबसे बड़ा मल्टी-डोमेन कॉम्बैट मिशन बताया गया है। इसका मकसद पाकिस्तान की ओर से समर्थित सीमा पार आतंकवाद को कड़ा जवाब देना था। इस अभियान में सेना, वायुसेना और नौसेना ने संयुक्त रूप से काम किया और आधुनिक युद्ध के लगभग हर आयाम का इस्तेमाल किया गया।

CDS जनरल अनिल चौहान ने क्या कहा? चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ अनिल चौहान ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने भारतीय सेनाओं की संयुक्त युद्ध क्षमता को साबित किया। उन्होंने कहा, 'हमने दुश्मन को हर स्तर पर मात दी।' जनरल चौहान के मुताबिक, इस ऑपरेशन ने दिखाया कि भविष्य के युद्ध सिर्फ पारंपरिक हथियारों से नहीं, बल्कि साइबर, स्पेस और टेक्नोलॉजी आधारित रणनीति से भी लड़े जाएंगे। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में ऑपरेशन सिंदूर अप्रैल 2025 में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान समर्थित आतंकियों ने 26 पर्यटकों की हत्या कर दी थी। इसके कुछ ही दिनों बाद भारत ने जवाबी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर हमला किया।

KAP-3 चीते को राजस्थान में था खतरा! झालावाड़ से रेस्क्यू कर कूनो के जंगल में छोड़ा, 800KM कर चुका सफर

दैनिक कारखाने का सफर। श्योपुर

कूनो नेशनल पार्क का 'भगोड़ा' चीता KAP-3 आखिरकार वापस अपने घर लौट आया है। बीते दिनों उसने करीब करीब 800 किलोमीटर का लंबा सफर तय किया है। वह कूनो से निकलकर राजस्थान के झालावाड़ पहुंच चुके इस चीते को वन विभाग की टीम ने सफलतापूर्वक रेस्क्यू कर वापस कूनो के जंगलों में छोड़ दिया है। दरअसल, कूनो नेशनल पार्क का चीता KAP-3 बीते दिनों बार—बार कूनो का जंगल छोड़कर और एमपी की सीमा लांघकर राजस्थान के बांरा जिले में पहुंच गया था। उसकी मौजूदगी से दोनों प्रदेशों और तीन जिलों में हलचल मच गई थी। करीब 17 दिन बाद इस चीते को कूनो के विशेषज्ञों की टीम ने सुरक्षित रेस्क्यू कर वापस कूनो लाकर जंगल में छोड़ दिया है। उसे वापस लाने के पीछे उसकी जान की सुरक्षा को भी एक कारण माना जा रहा है, हालांकि अधिकारियों ने इस बावत कुछ भी जानकारी नहीं दी है।

भारतीय धरती पर जन्मा और कूनो से निकलकर राजस्थान तक पहुंचा कूनो का KAP-3 चीता अब वापस अपने घर लौट आया है। उसे ट्रेंक्युलाइज कर विशेषज्ञों की टीम विशेष वाहन से कूनो लाई थी। जानकारों के अनुसार विशेषज्ञों की सलाह और एमपी और राजस्थान वन विभाग के परामर्श के बाद चीते को वापस लाया गया है। कूनो प्रबंधन के अधिकारियों के अनुसार चीता KAP-3 भीषण गर्मी में राजस्थान सीमा में मौजूद था। इस दौरान लगातार गर्मी, उसे पीने के पानी के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था। सफर के दौरान उसने हाईवे को पार किया था। यह उसके लिए खतरनाक हो सकता था। इस कारण विशेषज्ञों ने उसे झालावाड़ और राजस्थान सीमा से रेस्क्यू किया है। बता दें कि चीता KAP-3 भारतीय धरती पर जन्मा चीता है। वह नामीबियाई मादा चीता आशा से कूनो में जन्मा था। उसके साथ दो अन्य जुड़वा भाई भी जन्मे थे। इनमें से दूसरा चीता KAP-2 भी उसके पीछे-पीछे राजस्थान तक पहुंचा था। बाद में वह स्वतः सीमा में लौट आया था। जबकि चीता KAP-3 ने राजस्थान के बारां जिले से लेकर शेरगढ़ अभयारण तक का सफर कर लिया है। इसने अपनी इस जर्नी में करीब 800 किलोमीटर सफर किया है।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

गतांक से आगेः लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

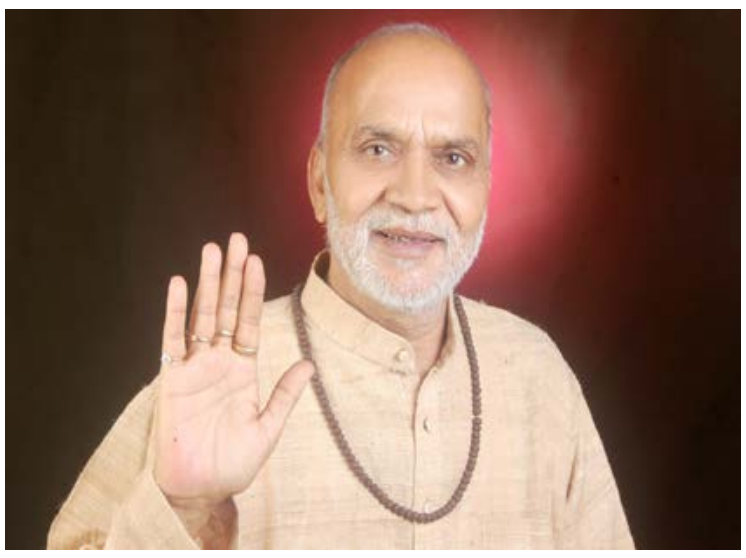

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

श्री दादाजी गुरुदेव की शिक्षाएँ और उनका जीवन में अनुप्रयोग सद्गुरु का जीवन केवल उपदेश देने तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह स्वयं एक जीवंत उदाहरण होता है। सद्गुरु श्री दादाजी गुरुदेव की शिक्षाएँ अत्यंत सरल, व्यवहारिक और जीवन को सार्थक बनाने वाली हैं। उनका प्रत्येक संदेश मानव को आत्मिक उन्नति के साथ-साथ एक श्रेष्ठ और संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। दादाजी गुरुदेव की शिक्षाओं का मूल आधार श्रद्धा, विश्वास और समर्पण है। उनका कहना है कि जब तक मन में दृढ़ विश्वास नहीं होगा, तब तक साधना का वास्तविक फल प्राप्त नहीं हो सकता। श्रद्धा वह शक्ति है, जो साधक को कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर बनाए रखती है।

उनकी एक प्रमुख शिक्षा है सत्य और सरलता का पालन। आज के युग में जहाँ दिखावा और आडंबर बढ़ता जा रहा है, वहाँ दादाजी गुरुदेव का संदेश हमें सादगी और सत्यनिष्ठा की ओर लौटने का मार्ग दिखाता है। जब व्यक्ति अपने विचार, वचन और कर्म में एकरूपता लाता है, तभी उसके जीवन में वास्तविक शांति और संतोष का उदय होता है।

नाम-स्मरण और सत्संग को उन्होंने साधना का सबसे सहज और प्रभावी मार्ग बताया है। निरंतर ईश्वर का स्मरण मन को शुद्ध करता है और सत्संग से विवेक जागृत होता है। जब साधक इन दोनों को अपने जीवन का अंग बना लेता है, तब उसका दृष्टिकोण सकारात्मक और व्यापक हो जाता है। दादाजी गुरुदेव सेवा को भी अत्यंत महत्व देते हैं। उनके अनुसार निस्वार्थ भाव से की गई सेवा ही सच्ची भक्ति है। जब हम बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की सहायता करते हैं, तब हमारे भीतर करुणा और प्रेम का विस्तार होता है। यही भावना हमें ईश्वर के और निकट ले जाती है। उनकी शिक्षाओं का वास्तविक अनुप्रयोग तब होता है, जब हम उन्हें अपने दैनिक जीवन में उतारते हैं। परिवार में प्रेम और सौहार्द बनाए रखना, समाज में सद्भाव और सहयोग की भावना रखना, तथा अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करना ये सभी उनके उपदेशों का ही विस्तार हैं। दादाजी गुरुदेव का यह भी संदेश है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए। प्रत्येक चुनौती हमें कुछ नया सिखाने के लिए आती है। यदि हम धैर्य और विश्वास के साथ उनका सामना करें, तो वही कठिनाइयाँ हमारे विकास का साधन बन जाती हैं। अंततः उनकी सभी शिक्षाओं का सार यही है कि मनुष्य अपने भीतर स्थित दिव्यता को पहचानें। जब व्यक्ति अपने आत्मस्वरूप को समझ लेता है, तब उसका जीवन स्वतः ही आनंद, शांति और संतोष से भर जाता है। विनम्र प्रार्थना है कि हम सभी सद्गुरु श्री दादाजी गुरुदेव की शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करें और उनके बताए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सफल एवं सार्थक बनाएं। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और भक्ति है।

मई में मौसम का मिजाज बिगड़ा आधे घंटे की बारिश ने दी राहत भी,बढ़ाई किसानों की चिंता भी

तेज हवा से आम की फसल को नुकसान,गेहूं और चना भंडारण पर मंडराया खतरा, लेकिन गर्मी से जूझ रही कुछ फसलों को मिल सकती है राहत

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सारनी क्षेत्र सहित आसपास के ग्रामीण अंचलों में गुरुवार दोपहर लगभग 3 बजे अचानक मौसम ने करवट ली। चिलचिलाती धूप और उमस के बीच अचानक तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हो गई।करीब आधे घंटे तक हुई इस बे-मौसम बारिश ने लोगों को कुछ समय के लिए गर्मी से राहत तो दिलाई,लेकिन इसके बाद फिर से तेज धूप और उमस लौट आने से जनजीवन बेहाल हो गया।बारिश थमने के बाद शाम करीब 4 बजे मौसम एक बार फिर तपिश भरा हो गया।हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों ने माना कि कुछ देर के लिए चली ठंडी हवाओं और बारिश ने राहत का एहसास जरूर कराया,लेकिन तेज धूप निकलते ही उमस और गर्मी ने लोगों को फिर परेशान कर दिया।इस अचानक बदले मौसम का सबसे अधिक असर किसानों और बागवानों पर पड़ने की संभावना जताई जा रही है। तेज हवा के कारण आम की फसल को खासा नुकसान पहुंचने की खबरें सामने आ रही हैं।कई स्थानों पर पेड़ों से कच्चे आम टूटकर गिर गए, जिससे बाग मालिकों को आर्थिक क्षति उठानी पड़ सकती है।इस समय आम की फसल तैयार होने की अवस्था में है और तेज हवा के साथ हुई बारिश ने उत्पादन पर असर डालना शुरू कर दिया है।कृषि विशेषज्ञों के अनुसार मई महीने में होने वाली इस तरह की बे-मौसम बारिश का असर फसलों पर मिला-जुला रहता है। जिन किसानों ने गेहूं और चना की फसल काटकर खुले स्थानों पर रखी हुई है,उनके लिए यह बारिश नुकसानदायक साबित हो सकती है।यदि अनाज भीग जाता है तो उसकी गुणवत्ता प्रभावित होती है और बाजार में उचित मूल्य मिलने में कठिनाई आती है।वहीं दूसरी ओर मक्का,मूंग,उड़द और सब्जियों की शुरुआती फसलों के लिए यह बारिश कुछ हद तक लाभकारी मानी जा रही है।तेज गर्मी के कारण खेतों में नमी तेजी से खत्म हो रही थी,ऐसे में हल्की बारिश से मिट्टी में नमी बनी रहेगी और कुछ फसलों को सिंचाई से अस्थायी राहत मिल सकती है।विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि यदि ऐसी बारिश लगातार नहीं होती और केवल हल्की बौछारों तक सीमित रहती है,तो इससे तापमान में थोड़ी गिरावट आ सकती है, जिससे किसानों को खेतों में काम करने में राहत मिलेगी। लेकिन तेज हवाओं और आंधी के साथ होने वाली बारिश फलों और खड़ी फसलों के लिए चिंता का कारण बन सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों का कहना है कि मौसम का यह बदला स्वरूप आने वाले दिनों में और भी परेशानी खड़ी कर सकता है।एक ओर गर्मी का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है,वहीं दूसरी ओर अचानक हो रही बारिश और तेज हवाएं खेती-किसानी की चिंता बढ़ा रही हैं।किसानों को अब उम्मीद है कि मौसम स्थिर रहे ताकि उनकी मेहनत पर प्राकृतिक मार न पड़े।

172 गांवों की जिंदगी दांव पर मौत के साए में चल रहा घोड़ाडोंगरी का लोक सेवा केंद्र नई पहल का दम भरने वाला प्रशासन खुद जर्जर दीवारों में कैद,छत टपकी तो जिम्मेदार कौन

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

शासन ने ग्रामीणों को एक ही छत के नीचे सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बड़े उत्साह के साथ लोक सेवा केंद्र की शुरुआत तो कर दी,लेकिन आज वही केंद्र खुद बदहाली और लापरवाही का प्रतीक बन चुका है। घोड़ाडोगरी ब्लॉक के अंतर्गत आने वाले 172 राजस्व गांवों के हजारों ग्रामीण रोजाना जिस भवन में अपने जरूरी काम करवाने पहुंचते हैं,वह भवन अब किसी हादसे का इंतजार करता दिखाई दे रहा है।लोक सेवा केंद्र में प्रतिदिन आधार कार्ड अपडेट, जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र,जाति प्रमाण पत्र,आय प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र,समग्र आईडी सुधार,पेंशन संबंधी कार्य,राशन कार्ड अपडेट, किसान पंजीयन,श्रम कार्ड, राजस्व अभिलेखों से जुड़े आवेदन और शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के दस्तावेज तैयार किए जाते हैं।यही कारण है कि प्रतिदिन बड़ी संख्या में ग्रामीण,महिलाएं,बुजुर्ग और छात्र यहां घंटों लाइन लगाकर अपनी बारी का इंतजार करते हैं।लेकिन विडंबना यह है कि जिस भवन में लोक सेवा का दावा किया जा रहा है,उसकी हालत खुद सरकारी व्यवस्था की पोल खोल रही है।भवन के बाहर जगह-जगह से प्लास्टर झड़ चुका है,दीवारों की ईंटें खुलकर बाहर दिखाई देने लगी हैं। वहीं अंदर प्रवेश करते ही कई स्थानों पर छत और दीवारों का प्लास्टर गिरा हुआ नजर आता है।लोहे की सरिया बाहर झांक रही है,जो यह बताने के लिए काफी है कि भवन अब अपनी उम्र पूरी कर चुका है।ग्रामीणों का कहना है कि बरसात शुरू होने से पहले ही भवन की हालत डर पैदा कर रही है। यदि तेज बारिश हुई तो छत टपकने,दीवार दरकने या किसी बड़े हिस्से के गिरने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।सबसे चिंताजनक बात यह है कि प्रतिदिन सैकड़ों लोग अपनी जान जोखिम में डालकर यहां सरकारी काम करवाने पहुंच रहे हैं।लोक सेवा केंद्र में कार्यरत कर्मचारियों ने भी स्वीकार किया कि भवन की मरम्मत को लेकर कई बार लोक निर्माण विभाग को पत्राचार किया जा चुका है, लेकिन अब तक केवल कागजी प्रक्रिया ही चलती रही।न तो मरम्मत हुई और न ही किसी वैकल्पिक भवन की व्यवस्था की गई। कर्मचारियों का कहना है कि अब इस भवन में बैठकर काम करना किसी खतरे से कम नहीं रह गया है।

विशेषज्ञों के अनुसार,ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित लोक सेवा केंद्र शासन और जनता के बीच सबसे महत्वपूर्ण कड़ी माने जाते हैं। मध्यप्रदेश में डिजिटल सेवाओं के विस्तार के बाद इन केंद्रों पर लोगों की निर्भरता लगातार बढ़ी है। ऐसे में यदि आधारभूत संरचना ही जर्जर हो जाए तो यह केवल प्रशासनिक लापरवाही नहीं,बल्कि जनसुरक्षा के साथ खिलवाड़ भी माना जाएगा।अब बड़ा सवाल यही है कि क्या प्रशासन किसी अप्रिय घटना का इंतजार कर रहा है।क्या किसी ग्रामीण की जान जाने के बाद ही जिम्मेदार विभागों की नींद खुलेगी। फिलहाल घोड़ाडोगरी का यह लोक सेवा केंद्र शासन की नई पहल से ज्यादा लापरवाही की मिसाल बनकर खड़ा दिखाई दे रहा है। जिससे ग्रामीणों में किसकी जर्जर स्थिति को देखकर भय उत्पन्न होता दिखाई दे रहा है।

अमरनाथ यात्रा के दौरान इंदौर ,भोपाल से जम्मू तक की स्पेशल ट्रेन चलाई जाए-रिंकू भटेजा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

ओम शिव शक्ति सेवा मंडल के सचिन रिंक भटेजा ने बताया कि इस वर्ष अमरनाथ यात्रा 3 जुलाई से प्रारंभ होकर 28 अगस्त रक्षाबंधन तक चलेगी जो 57 दिनों की होगी। इंदौर, भोपाल से प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु बाबा बर्फानी के दर्शन करने जाते हैं सीमित ट्रेन ही जम्मू तवी जाती हैं जिस कारण से श्रद्धालुओं का रिजर्वेशन नहीं हो पता है मंडल ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोशल मीडिया" ×"माध्यम से मांग की है जिस प्रकार कुंभ मेला के दौरान स्पेशल ट्रेन चलाई गई थी उसी तरह अमरनाथ यात्रा के दौरान इंदौर ,भोपाल से जम्मू के लिए स्पेशल ट्रेन चलने की घोषणा शीघ्र करें। ताकि जिन यात्रियों का रिजर्वेशन नहीं हो पाया है वह स्पेशल ट्रेन से यात्रा करके बाबा बर्फानी के दर्शन कर सके।

बरगी क्रूज हादसे का मामला पहुंचा हाईकोर्टःएमपी में क्रूज-बोट सेवाएं रोकने की मांग, भोपाल निवासी याचिकाकर्ता ने लगाई याचिका

दैनिक कारखाने का सफर। जबलपुर

मध्यप्रदेश के जबलपुर स्थित बरगी बांध में हुए बहुचर्चित क्रूज हादसे का मामला अब हाईकोर्ट पहुंच गया है। भोपाल निवासी कमल कुमार राठी ने मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की जबलपुर मुख्यपीठ में जनहित याचिका दायर कर हादसे को "गंभीर प्रशासनिक लापरवाही" बताया है। याचिका में दोषी अधिकारियों के खिलाफ आपराधिक कार्रवाई, प्रदेशभर के वाटर स्पोर्ट्स और क्रूज संचालन का सेफ्टी ऑडिट कराने तथा जांच पूरी होने तक सभी क्रूज बोट सेवाएं बंद करने की मांग की गई है। याचिका में कहा गया है कि 30 अप्रैल 2026 को बरगी बांध में संचालित "नर्मदा क्रूज" तेज आंधी और ऊंची लहरों के बीच पलट गई थी। इस हादसे में अब तक 13 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि कई यात्री घायल हुए हैं। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया है कि क्रूज में क्षमता से अधिक यात्री सवार थे। दावा किया गया है कि बोट में 43 से 47 लोग मौजूद थे, जबकि केवल 29 टिकट जारी किए गए थे। पिटीशन में यह भी कहा गया है कि मौसम विभाग ने 29 अप्रैल को ही तेज हवाओं और खराब मौसम का अलर्ट जारी कर दिया था, इसके बावजूद क्रूज संचालन नहीं रोका गया। यात्रियों को यात्रा शुरू होने से पहले लाइफ जैकेट उपलब्ध नहीं कराई गईं। एक महिला यात्री के हवाले से याचिका में उल्लेख किया गया है कि नाव में पानी भरने के बाद आनन-फानन में लाइफ जैकेट बांटी गई थीं। जनहित याचिका में राज्य सरकार, एमपी टूरिज्म बोर्ड, आईडब्ल्यूएआई, जबलपुर कलेक्टर और एसपी सहित 8 पक्षकार बनाए गए हैं। याचिकाकर्ता का कहना है कि यह हादसा Inland Vessels Act-2021 और NDMA की Boat Safety Guidelines-2017 के उल्लंघन का परिणाम है। याचिका में हाईकोर्ट से मांग की गई है कि प्रदेश के सभी जल पर्यटन स्थलों पर संचालित क्रूज, हाउस बोट और मोटर बोट सेवाओं का व्यापक सुरक्षा ऑडिट कराया जाए, राज्य स्तरीय सुरक्षा नियम लागू किए जाएं और जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाए।

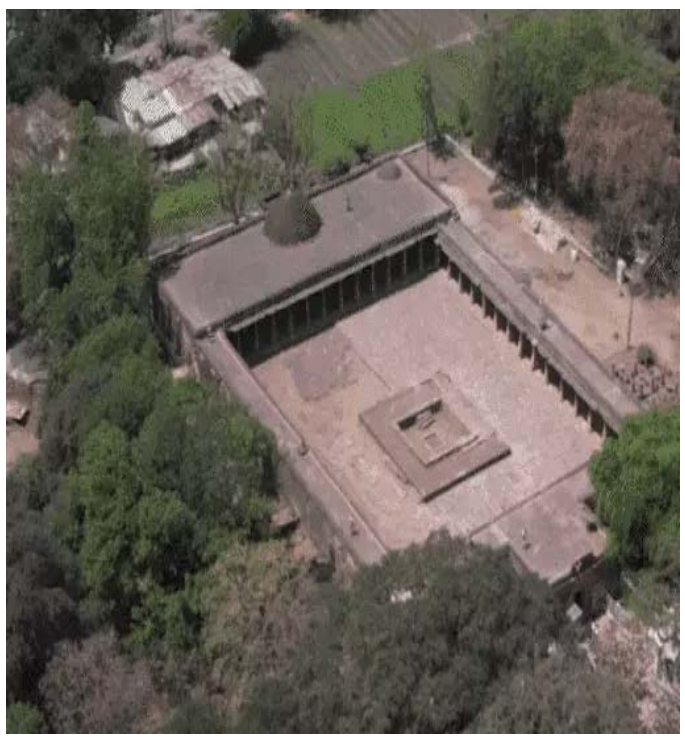

ऐतिहासिक दस्तावेजों की वैधानिकता पर बहस तेज, भोजशाला विवाद में ASI की रिपोर्ट बनी बहस का केंद्र, जैन पक्ष ने दोहराया-भोजशाला थी जैन गुरुकुल

दैनिक कारखाने का सफर। इंदौर

चर्चित भोजशाला मामले में मप्र हाई कोट की इंदौर बेंच में चल रही सुनवाई के दौरान गुरुवार को राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की सर्वे रिपोर्ट के विभिन्न अंशों का हवाला देते हुए कहा कि रिपोर्ट में कई ऐसे तथ्य और निष्कर्ष दर्ज हैं, जो यह संकेत देते हैं कि विवादित स्थल पूर्व में सरस्वती मंदिर था। यह सुनवाई हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस की याचिका पर हुई। महाधिवक्ता ने कहा कि 'धार दरबार ऐलान' को अंतिम तथ्य नहीं माना जा सकता। उन्होंने इस मुद्दे पर भी विस्तार से पक्ष रखा और कहा कि इस बिंदु को पूर्व में सीनियर एडवोकेट सलमान खुर्शीद, तौसिफ वारसी और शोभा मेनन द्वारा उठाया गया था। महाधिवक्ता ने कहा कि "धार दरबार ऐलान" को अलग रूप से पढ़कर अंतिम निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता, क्योंकि स्वयं धार दरबार के प्रमुख वी. नाडकर ने पूरी कार्यवाही के दौरान यह स्वीकार किया था कि उक्त स्थल पूर्व में सरस्वती मंदिर था। उन्होंने कहा कि केवल इस कथन के आधार पर कि "यहां नमाज होती आई है, होती है और आगे भी होती रहेगी", किसी दस्तावेज को निर्णायक नहीं माना जा सकता।

इस कथन को ऐतिहासिक और विधिक संदर्भ में समग्र रूप से देखना आवश्यक है।'धार दरबार ऐलान' को कानून का दर्जा नहीं महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने कोर्ट को बताया कि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट Government of India Act 1935 वर्ष 1937 में लागू हुआ था इसलिए उससे पहले जारी किसी कथित "धार दरबार ऐलान" को इस अधिनियम के आधार पर वैधानिक मान्यता नहीं दी जा सकती। उन्होंने दलील दी कि किसी दस्तावेज या प्रावधान को "कानून" का दर्जा प्राप्त करने के लिए उसका विधायी प्रक्रिया से पारित होना आवश्यक है। जबकि "धार दरबार ऐलान" की प्रकृति ही स्पष्ट नहीं है कि वह प्रशासनिक, कार्यपालिका संबंधी या विधायी दस्तावेज था। ऐसी स्थिति में उक्त दस्तावेज को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 13 के तहत "विधि" नहीं माना जा सकता। उन्होंने भारत शासन अधिनियम 1935 की धारा 311(2) का उल्लेख करते हुए कहा कि तथाकथित "धार दरबार ऐलान" को वैधानिक रूप से कानून का दर्जा नहीं दिया जा सकता। सुनवाई के दौरान सलेकचंद जैन द्वारा दायर याचिका में एडवोकेट दीपक राजभर (दिल्ली) ने भी कोर्ट के समक्ष पक्ष रखा। उन्होंने दावा दोहराया किया कि भोजशाला पूर्व में जैन गुरुकुल था और वहां जैन देवी अंबिका का मंदिर स्थित था।

भोपाल निगम की 8 मंजिला बिल्डिंग...एक ही जगह सबकुछ

सी एम ने किया लोकार्पण, नीचे जनता से जुड़े काम होंगे, 73 करोड़ हो गई लागत

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल की नई बिल्डिंग का लोकार्पण करते मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं अन्य जनप्रतिनिधि। तुलसी नगर (सेकंड स्टॉप) पर भोपाल नगर निगम का नया मुख्यालय तैयार है। यह अटल भवन के नाम से जाना जाएगा। यहां एक ही छत के नीचे पूरी नगर सरकार होगी। अब तक नागरिकों को अलग-अलग कामों के लिए शहर के कई हिस्सों में जाना पड़ता था। गुरुवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इस भवन का उद्घाटन किया। पहले इस बिल्डिंग की लागत 43 करोड़ रुपए बताई गई थी, लेकिन गुरुवार को जब इसका उद्घाटन हुआ तो इसकी लागत 73 करोड़ रुपए बताई गई। 43 करोड़ रुपए में सिविल के काम हुए, जबकि बाकी राशि से अन्य कार्य करवाए गए। यह प्रदेश की पहली नगरीय निकाय बिल्डिंग है, जो जियोथर्मल तकनीक से लैस है। पार्किंग पर लगे सोलर पैनलों से 300 किलोवाट बिजली बनेगी। नवनिर्मित मुख्यालय का नाम 'अटल भवन' रखा गया है। इसके लोकार्पण के साथ नीमच जिले में भोपाल निगम द्वारा स्थापित 10.5 मेगावॉट सोलर प्रोजेक्ट का भी लोकार्पण किया गया। लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव। लोकार्पण कार्यक्रम में जिले के प्रभारी मंत्री चैतन्य काश्यप, मंत्री कृष्णा गौर, प्रतिमा बागरी, विधायक रामेश्वर शर्मा, भगवानदास सबनानी, विष्णु खत्री, महापौर मालती राय, निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी, अपैक्स बैंक प्रशासक महेंद्र यादव, बीजेपी प्रदेश महामंत्री राहुल कोठारी, जिलाध्यक्ष रविंद्र यति आदि मौजूद थे। अतिथियों का एमआईसी मेंबर राजेश हिंगोरानी, मनोज राठौर, जगदीश यादव, जितेंद्र शुक्ला, सुषमा बावीसा, अशोक वाणी, आरके सिंह बघेल, छाया ठाकुर, आनंद अग्रवाल, पार्षद बृजला सचाण ने स्वागत किया। पार्षद ममता विश्वकर्मा, बबीता डोंगरे, प्रियंका मिश्रा, आरती आनेजा आदि भी मौजूद रहीं। कार्यक्रम के दौरान पूर्व महापौर सुनील सूद मंच के सामने दर्शक दीर्घा में बैठे नजर आए। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उनका नाम भी लिया। हालांकि, निगम ने उनके लिए मंच पर जगह सुरक्षित नहीं रखी थी। पिछली बैठकों में सामने आया था कि नई बिल्डिंग की लागत 43 करोड़ रुपए है, लेकिन गुरुवार को जब लोकार्पण हुआ तो इसकी लागत 73 करोड़ रुपए बताई गई है। महापौर राय जब स्वागत भाषण दे रही थी, तब उन्होंने कहा कि बिल्डिंग की लागत 73 करोड़ रुपए है। ऐसे में यह मामला सुर्खियों में आ गया है। निगम की नई बिल्डिंग में बच्चों के लिए प्ले रूम भी तैयार किया गया है। ग्राउंड फ्लोर पर एक ही जगह पर विभागों की शाखाएं रहेंगी। जहां आवेदन किए जा सकेंगे। मेडिकल इमरजेंसी के लिए रूम भी तैयार किया गया है। जहां मेडिकल सुविधा मिलेगी। नगर निगम की नवनिर्मित बिल्डिंग। एक जगह पर आ जाएंगे सभी विभाग बिल्डिंग की शुरुआत के बाद निगम के सभी विभाग एक ही बिल्डिंग में आ जाएंगे। हालांकि, दो महीने पहले से ही कई ऑफिस शिफ्ट किए जा चुके हैं। अब सेंट्रल वर्कशॉप, हाउसिंग फॉर ऑल, सिविल, जनसंपर्क, विद्युत, बीसीएलएल, जल कार्य, सीवेज, स्वच्छ भारत मिशन, जन्म-मृत्यु, विवाह पंजीयन, झील प्रकोष्ठ, एनयूएलएम, राजस्व, गोवर्धन परियोजना, अतिक्रमण, बिल्डिंग परमिशन शाखाएं एक ही जगह पर लगेगी। ग्राउंड फ्लोर पर एंटर होते ही जनसुविधा केंद्र स्थापित किया गया है। जहां एक ही स्थान पर सभी विभागों से संबंधित जानकारी आवेदक को मिलेगी। बिल्डिंग परमिशन समेत कई जनसुविधा भी यहां मिलेंगी। लोकार्पण कार्यक्रम में शामिल लोग। अभी कई जगह पर संचालित ऑफिस अभी भोपाल के कई स्थानों पर निगम के ऑफिस में शाखाएं संचालित की जा रही हैं। आईएसबीटी और माता मंदिर में महापौर, अध्यक्ष और कमिश्नर के कक्ष के साथ कई शाखाएं हैं। शाहपुरा में बिल्डिंग परमिशन शाखा है, जबकि फतेहगढ़ में स्वास्थ्य शाखा लग रही है। 5 एकड़ जमीन में बनी इस बिल्डिंग में कई खामियां भी हैं। पहले मीटिंग हॉल को लेकर बड़ी भूल सामने आ चुकी है। दरअसल, करोड़ों रुपए की लागत से बिल्डिंग तो बना दी गई है, लेकिन जिम्मेदार मीटिंग हॉल बनाना भूल गए थे। इसके लिए महापौर राय ने मुख्यमंत्री से लोकार्पण कार्यक्रम में जमीन की डिमांड भी की। ग्रीन बिल्डिंग कॉन्सेप्ट पर नगर निगम का नया मुख्यालय भवन बना है। बिल्डिंग के ठीक सामने परिसर में सोलर पैनल लगाए गए हैं। हालांकि, इसकी दिशा उत्तर-दक्षिणी होने की वजह से बिजली उत्पादन में असर पड़ सकता है। 5 एकड़ एरिया में बनी है नई बिल्डिंग, जिसमें कई खामी सामने आ रही हैं। एक बिल्डिंग, 3 कमिश्नर बिल्डिंग की पूरी डिजाइन निगम के तत्कालीन कमिश्नर केवीएस चौधरी कोलसानी ने बनवाई थी। उनकी मौजूदगी में बिल्डिंग का आधे से ज्यादा काम हुआ, जबकि बाकी काम हरेंद्र नारायण के समय हुआ। अब संस्कृति जैन के समय बिल्डिंग शुरू की जा रही है। ग्राउंड फ्लोरः जनसंपर्क, टैक्स काउंटर, विवाह पंजीकरण और बच्चों के लिए विशेष गेम जोन।

बीएचईएल भोपाल में कैंटीनों में ए सी लगाने की मांग के लिए कर्मचारियों का ऐबू को समर्थन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल भोपाल की कैंटीनों में बढ़ती गर्मी के बीच कर्मचारियों की सुविधा हेतु एयर कंडीशनर (AC) लगाए जाने की मांग अब जोर पकड़ने लगी है। ऑल इंडिया बीएचईएल एम्प्लॉईज यूनियन (AIBEU) द्वारा इस मांग को लेकर हस्ताक्षर अभियान शुरू किया गया है। यूनियन कार्यकर्ता विभिन्न कैंटीनों में पहुंचकर कर्मचारियों से समर्थन स्वरूप हस्ताक्षर करवा रहे हैं।

यूनियन का कहना है कि बीएचईएल भोपाल के मेहनतकश कर्मचारियों ने अपनी मेहनत और निष्ठा से कारखाने को 581 करोड़ के कर पूर्व लाभ तक पहुंचाया है, इसलिए कर्मचारियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना प्रबंधन की जिम्मेदारी है। AIBEU-NFITU के कैंटीन कमेटी सदस्य श्री अमित यादव द्वारा पूर्व में भी समिति की बैठक में कैंटीनों में AC लगाए जाने का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया था।

हस्ताक्षर अभियान को कर्मचारियों का व्यापक समर्थन मिल रहा है। कर्मचारियों का कहना है कि भीषण गर्मी में कैंटीनों में बैठकर भोजन करना कठिन हो रहा है, ऐसे में AC की व्यवस्था आवश्यक है।

यूनियन ने कहा कि कर्मचारी हित एवं मूलभूत सुविधाओं से जुड़े मुद्दों पर संघर्ष आगे भी जारी रहेगा।

नामदेव समाज विकास परिषद के प्रांतीय चुनाव में योग्य, ईमानदार एवं कर्मठ नेतृत्व के चयन की अपील

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

नामदेव समाज विकास परिषद (पंजीयन क्र. 3315/73) के प्रांतीय चुनाव दिनांक 17 मई 2026 को नामदेव समाज सामुदायिक भवन, प्लॉट नंबर 5, जवाहर चौक, भोपाल में आयोजित किए जाएंगे। परिषद के अध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष पदों हेतु निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न होगी।नामदेव समाज विकास परिषद के आजीवन सदस्य श्री जीवन नामदेव श्री शिवरतन नामदेव ने समाज के सभी आजीवन सदस्यों एवं मतदाताओं से अपील करते हुए कहा है कि चुनाव में ऐसे योग्य, ईमानदार, कर्मठ, मिलनसार एवं दूरदर्शी व्यक्तित्वों का चयन किया जाए, जो समाज को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि समाज का नेतृत्व ऐसे व्यक्तियों के हाथों में होना चाहिए जो सभी वर्गों को साथ लेकर चलें, समाज की एकता को मजबूत करें तथा केवल योजनाएं ही न बनाएं, बल्कि उन योजनाओं को धरातल पर उतारकर समाजहित में कार्य भी करें।

श्री शिवरतन नामदेव ने कहा कि समाज का सशक्त नेतृत्व वही होता है जो संगठन में समरसता, सहयोग एवं पारदर्शिता बनाए रखे। समाज के युवाओं, महिलाओं, वरिष्ठजनों एवं सभी वर्गों को साथ लेकर चलने वाला नेतृत्व ही समाज को आगे बढ़ा सकता है। उन्होंने सभी आजीवन सदस्यों से आग्रह किया कि वे 17 मई 2026 को अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर अपने मताधिकार का उपयोग करें तथा ऐसे प्रत्याशियों को अमूल्य वोट प्रदान करें जो समाज सेवा की भावना से कार्य करने वाले हों।

निर्वाचन प्रक्रिया के अंतर्गत 17 मई 2026 को परिषद की आमसभा आयोजित की जाएगी। यदि आम सहमति नहीं बनती है, तो उसी दिन दोपहर 1:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक मतदान कराया जाएगा। मतदान के उपरांत शाम 7:30 बजे से मतगणना प्रारंभ होगी तथा परिणामों की घोषणा की जाएगी।

इस चुनाव में परिषद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य मतदान करेंगे। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों से लगभग 2000 से 2500 सदस्यों के शामिल होने की संभावना है।

भोपाल के छोटा तालाब पर बिछाए गए पत्थर

भोपाल के छोटा तालाब किनारे डाले पत्थर, NGT की सख्ती, चार सप्ताह में पड़ताल कर रिपोर्ट देगी कमेटी, 15 जुलाई को होगी सुनवाई

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के छोटा तालाब किनारे नगर निगम के कायाकल्प प्रोजेक्ट पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने सख्ती दिखाई है। पर्यावरणविद् राशिद नूर की याचिका पर सुनवाई करते हुए एनजीटी ने एक कमेटी बनाई है, जो 4 सप्ताह में पड़ताल कर अपनी रिपोर्ट सौंपेंगी। 15 जुलाई को अगली सुनवाई होगी। करीब 6.99 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट का काम अप्रैल में शुरू हुआ था। जिस पर पर्यावरणविद् नूर ने आपत्ति जताई थी। तालाब के बफर जोन में पिचिंग के नाम पर निर्माण करने, पत्थर डालकर तालाब को और छोटा करने, पेड़ों की कटाई करने और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने की बात कही गई थी। इस पर एनजीटी ने कलेक्टर सहित सभी संबंधित एजेंसियों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा था। अप्रैल के पहले सप्ताह में नगर निगम ने मछली घर के सामने वाले हिस्से में काम शुरू किया था। यहां फुटपाथ रिपेयर करने, सड़क बनाने और बाउंड्रीवॉल की पिचिंग के काम हो रहे थे। दायर आवेदन में कहा गया था कि छोटा तालाब के बफर जोन में बिना अनुमति निर्माण और तैयारी गतिविधियां की जा रही हैं, जिससे पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। कई स्थानों पर गंदा पानी सीधे झील में गिरता नजर आता है, जिससे पानी की गुणवत्ता प्रभावित होने की आशंका है। इसके अलावा किनारों पर प्लास्टिक, घरेलू कचरा और सी एंड डी वेस्ट का ढेर भी देखा जा सकता है। अतिक्रमण और मलबे से जल फैलाव क्षेत्र घट रहा निर्माण शुरू होते ही पर्यावरण कार्यकर्ता राशिद नूर ने एनजीटी में आवेदन लगा दिया था। भोज वेटलैंड को लेकर उनकी एक याचिका पहले से विचाराधीन है। छोटा तालाब भी उसी का हिस्सा है, जहां 50 मीटर तक निर्माण पर रोक है। अतिरिक्त फोटोग्राफ्स एवं दस्तावेजों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि भोज वेटलैंड एवं लोअर लेक क्षेत्र में सीवेज भी मिल रहा है। इससे पानी प्रदूषित हो रहा है और जलीय जीवों को नुकसान पहुंच रहा है। एनजीटी ने मामले की गंभीरता को देखते हुए कहा कि प्रस्तुत फोटो एवं दस्तावेज प्रथम दृष्टया गंभीर पर्यावरणीय उल्लंघनों को प्रदर्शित करते हैं।

संबंधित एजेंसियों द्वारा तत्काल हस्तक्षेप आवश्यक है। ट्रिब्यूनल ने भोपाल नगर निगम को निर्देशित किया कि वह व्यक्तिगत रूप से स्थल निरीक्षण कर अवैध एवं पर्यावरण विरोधी गतिविधियों की जांच करे और आवश्यक कार्रवाई कर अनुपालन रिपोर्ट प्रस्तुत करें।

इसके अलावा एक संयुक्त जांच समिति गठित की गई है। जिसमें सीपीसीबी, इप्को, मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रतिनिधि आदि को शामिल किया गया है। समिति चार सप्ताह में निरीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी। याचिकाकर्ता नूर की तरफ से अधिवक्ता हर्षवर्धन तिवारी ने पैरवी की।

चार धाम के लिए रवाना हुआ मंडल का दूसरा जत्था

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

ओम शिव शक्ति सेवा मंडल भोपाल के सचिव रिंकू भटेजा ने बताया कि फूल सिंह परमार के नेतृत्व में मंडल का 31 तीर्थ यात्रियों का दूसरा जत्था चार धाम यात्रा के लिए रवाना हुआ।

एक पहल यह भी- गरीब कन्याओं के विवाह का भोजन व्यय वहन करेगा सुखवाड़ा सेवाश्रम भोपाल

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जरुरतमंद और पितृविहीन/ गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की मदद की पहल 100 से 250 लोगों की भोजन व्यवस्था में दाल, चावल, सब्जी, रोटी /पुड़ी और बूंदी रखी जा सकेगी

भोपाल। गरीब कन्याओं के विवाह का भोजन व्यय सुखवाड़ा सेवाश्रम भोपाल वहन करेगा। जरुरतमंद और पितृविहीन/ गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की मदद की इस पहल में

100 से 250 लोगों की भोजन व्यवस्था में दाल, चावल, सब्जी, रोटी /पुड़ी और बूंदी रखी जा सकेगी।

सुखवाड़ा सेवाश्रम भोपाल द्वारा प्रदान की जाने वाली यह राशि न्यूनतम 5000 और अधिकतम 12,500 रुपये होगी।

इच्छुक परिवार द्वारा गरीबी रेखा के नीचे (बीपीएल) कार्ड, बिटिया के विवाह का निमंत्रण पत्र, संभावित मेहमानों की संख्या, बैंक खाता नम्बर, बैंक का आईएफएससी कोड, पितृ विहीन होने पर पिता की मृत्यु का प्रमाण पत्र, वार्षिक आय प्रमाण पत्र और मोबाइल नम्बर सुखवाड़ा के वाट्स एप नम्बर 94253 92656 पर साझा करने पर राशि हस्तांतरित की जा सकेगी।

इसके अतिरिक्त 5000 रुपये तक के दहेज की व्यवस्था एनजीओ परपीड़ा हर/ अस्मिता वेलफेयर भोपाल द्वारा की जा सकेगी।

कार्यपालक निदेशक, बीएचईएल, भोपाल ने शुमान हाइड्रोलिक प्रेस मशीन का उदघाटन किया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल, भोपाल में गुरुवार को प्रदीप कुमार उपाध्याय, कार्यपालक निदेशक, बीएचईएल, भोपाल ने शुमान हाइड्रोलिक प्रेस मशीन का उदघाटन किया । इस अवसर रुपेश तेलंग, महाप्रबंधक (फीडर्स, टीसीबी विनिर्माण, वाणिज्य एवं अनुरक्षण), आशीष औरंगाबादकर, महाप्रबंधक (वैक्स एवं एमओडी), संतोष डोंगरे, महाप्रबंधक (फीडर्स) एवं विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे । इस मशीन के सफलतापूर्वक आधुनिकीकरण से तकनीकी उन्नयन एवं उत्पादन क्षमता वृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है । मशीन में नवीनतम हाइड्रोलिक पावर पैक एवं कंट्रोल पैनल स्थापित किया गया है जिससे मशीन की कार्यक्षमता, विश्वसनीयता, संचालन क्षमता तथा उत्पाद गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है । यह कार्य कारखाना इंजीनियरिंग एवं सेवा तथा फीडर्स अनुरक्षण विभाग द्वारा अत्यंत कम समय एवं न्यूनतम लागत में सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया । इस उन्नयन से उत्पादन प्रक्रिया अधिक सुचारु एवं सुरक्षित हुई है । बीएचईएल, भोपाल निरंतर तकनीकी उन्नयन एवं दक्षता वृद्धि के प्रयासों के अंतर्गत इस प्रकार के नवाचारपूर्ण कार्य करता रहता है जिससे उद्योग क्षेत्र में उसकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता और अधिक सुदृढ़ हो रही है ।

भेल के कॉइल एवं इंसुलेशन विनिर्माण (CIM) डिवीजन में "ऑटो टेपिंग मशीन" का उद्घाटन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल, भोपाल में गुरुवार को प्रदीप कुमार उपाध्याय, कार्यपालक निदेशक, बीएचईएल, भोपाल ने कॉइल एवं इंसुलेशन विनिर्माण (CIM) डिवीजन में "ऑटो टेपिंग मशीन" का उद्घाटन किया । इस अवसर पर रुपेश तेलंग, महाप्रबंधक (फीडर्स, टीसीबी विनिर्माण, वाणिज्य एवं अनुरक्षण), आशीष औरंगाबादकर, महाप्रबंधक (वैक्स एवं एमओडी), संतोष डोंगरे, महाप्रबंधक (फीडर्स) एवं सुश्री प्रीति गुप्ता, अपर महाप्रबंधक (सीआईएम) उपस्थित थे । बीएचईएल, भोपाल ने तकनीकी आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है । इस उन्नत सुविधा से उत्पादन प्रक्रियाओं में सटीकता, गुणवत्ता तथा ग्राहक संतुष्टि में वृद्धि होगी । यह बीएचईएल की तकनीकी उन्नयन के प्रति प्रतिबद्धता एवं औद्योगिक विकास में योगदान को दर्शाती है ।

अपना सोना, अपने पास!

आरबीआई का अभी जो 698.5 बिलियन डॉलर का विदेशी मुद्रा भंडार है, उसमें 17 फीसदी हिस्सा सोने का है। अप्रैल 2023 की शुरुआत में यह हिस्सा महज 7.8 प्रतिशत का था। तब से हर साल इसमें बढ़ोतरी हुई है। भारतीय रिजर्व बैंक ने पिछले अक्टूबर से मार्च के बीच विदेशी भंडारों से अपना 100 टन सोना वापस मंगवा लिया। इस तरह अब उसके भंडार में 680 टन सोना हो गया है। दरअसल, आरबीआई का अभी जो 698.5 बिलियन डॉलर का विदेशी मुद्रा भंडार है, उसमें 17 फीसदी हिस्सा सोने का है। अप्रैल 2023 की शुरुआत में यह हिस्सा महज 7.8 प्रतिशत का था। तब से हर साल इसमें बढ़ोतरी हुई है। इसकी वजह सोने की खरीदारी के साथ-साथ विदेशों से अपना सोना मंगवाना भी है। आरबीआई का यह कदम दुनिया में 2022 के बाद तेज होती गई प्रवृत्ति के अनुरूप है। फरवरी 2022 में यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद पश्चिमी देशों ने अपने यहां जमा रूस के सोने को जब्त कर लिया। उससे उनकी वित्तीय व्यवस्था की साख पर गंभीर प्रश्न खड़े हुए। संदेश गया कि जो देश अपनी विदेश या सामरिक नीति को अमेरिका के अनुरूप नहीं रखेगा, उसकी भी संपत्ति जब्त हो सकती है। अब हालात ऐसे हैं कि फ्रांस अमेरिका में रखे अपने सोने को वापस मंगवा चुका है। जर्मनी भी ऐसा करने का संकेत दे रहा है। इस बीच सोने की खरीदारी का आलम यह है कि गुजरे छह में से पांच महीनों अमेरिका का सबसे बड़ा निर्यात सोना रहा।

समझा जाता है कि इसका अधिकांश हिस्सा स्विट्जरलैंड गया, जहां से चीन और अन्य देशों ने उसकी बड़े पैमाने पर खरीदारी की। चीन ने अपनी मुद्रा को स्वर्ण समर्थित करने की दिशा में स्पष्ट कदम उठाए हैं। इन परिघटनों के कारण सोने की कीमत तेजी से बढ़ी है। उसका लाभ सेंट्रल बैंकों को मिला है। कीमत बढ़ने के साथ उनके भंडार मौजूद सोने का मूल्य बढ़ता है, जिससे बिना किसी नई आवक के विदेशी मुद्रा भंडार बड़ा दिखने लगता है। साथ ही डॉलर की कीमत में अस्थिरता के प्रभाव से बचाव भी होता है। अच्छी बात है कि आरबीआई इस मामले में वैश्विक रुझान के अनुरूप चला है। उसने सोने में अपना निवेश भी बढ़ाया है। जब दुनिया बड़े बदलाव के दौर से गुजर रही हो, ऐसे कदम सुरक्षा का भाव मजबूत करते हैं।

विपक्ष के मुख्यमंत्रियों की घटती संख्या!

विपक्षी पार्टियों के मुख्यमंत्रियों की संख्या कम हो रही है। एक एक करके राज्य सरकारें उनके हाथों से निकल रही हैं। यह विपक्ष की पूरी राजनीति के लिए चिंता की बात है। विपक्षी पार्टियां भी इस बात को समझ रही हैं कि राज्यों में सरकार नहीं होने के क्या नुकसान हैं। संसाधनों के प्रबंधन से लेकर कार्यकर्ताओं के मनोबल पर इसका बड़ा असर होता है। वैसे भी इन दिनों एंटी इन्कम्बैंसी से ज्यादा असरदार प्रो इन्कम्बैंसी है खास कर भाजपा के मामले में। भाजपा जहां भी सरकार में है उसे हराना मुश्किल हो गया है। एकाध अपवाद होते हैं लेकिन सरकार में रहते हुए वापस सत्ता में लौटने का भाजपा का ट्रैक रिकॉर्ड बहुत अच्छा है। इसके विपरीत विपक्षी पार्टियों का ट्रैक रिकॉर्ड बहुत खराब है। एकाथ प्रादेशिक पार्टियां लौटी भी हैं तो कांग्रेस पिछले 15 साल में किसी भी राज्य में लगातार दूसरी बार सत्ता में नहीं लौटी है। बहरहाल, पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों ने विपक्षी गठबंधन को एक और बड़ा झटका दिया है। विपक्ष के दो मुख्यमंत्री कम हो गए हैं और दोनों बड़े कद्दावर नेता, जो वैचारिक और राजनीतिक रूप से भाजपा के लिए बड़ी चुनौती बने रहते थे। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की पार्टी चुनाव हार गई और 15 साल के बाद ममता सत्ता से बाहर हो गई हैं। इसी तरह 10 साल के इंतजार के बाद सत्ता में लौटे एमके स्टालिन भी सत्ता से बाहर हो गए हैं। उनकी पार्टी डीएमके चुनाव हार गई। कह सकते हैं कि अन्ना डीएमके के नेतृत्व वाला एनडीए नहीं जीता, बल्कि तीसरे स्थान पर चला गया। परंतु जो जीते हैं विजय वे किसी स्थिति में विपक्ष की वैसी राजनीतु नहीं करेंगे, जैसे स्टालिन करते थे। वे केंद्र के साथ सद्भाव रखेंगे। हालांकि कांग्रेस ने उनको समर्थन देने की शर्त रखी है कि वे भाजपा से तालमेल की बात नहीं करेंगे। लेकिन यह भी खबर है कि विजय अन्ना डीएमके से भी बात कर रहे हैं। सो, अगर कांग्रेस ज्यादा दबाव बनाएगी तो उनके सामने विकल्प है कि वे भाजपा गठबंधन वाली पार्टियों का समर्थन लेकर सरकार चलाएं। सो, ममता बनर्जी और एमके स्टालिन का सत्ता से बाहर होना विपक्ष के लिए बड़ा झटका है। केरल में यथास्थिति रही है। सीपीएम के नेतृत्व वाली एलडीएफ हारी तो कांग्रेस के नेतृत्व वाला यूडीएफ जीता। वहां पिनरायी विजयन की जगह कांग्रेस का मुख्यमंत्री बनेगा। सो, वहां की जीत हार का विपक्ष की राजनीति पर ज्यादा असर नहीं होगा। इन पांच राज्यों से पहले बिहार में बदलाव हुआ। नीतीश कुमार की जगह भाजपा के सम्राट चौधरी मंत्री बने। नीतीश विपक्षी खेमे में नहीं थे लेकिन भाजपा के साथ रहते हुए भी उनकी राजनीति अलग थी। उनसे हमेशा विपक्षी पार्टियों को एक उम्मीद रहती थी। लेकिन वह उम्मीद भी खत्म हो गई।

भाजपा और ऊपर जाएगी या ढलान आएगा!

देश की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी की आज वह स्थिति है, जो आजादी के बाद पांचवें और छठे दशक में कांग्रेस की थी। छठे दशक के आखिरी दिनों में कांग्रेस का किला दरकने लगे था और समाजवादी राजनीति करने वाली पार्टियों के साथ साथ भारतीय जनसंघ का भी असर दिखना शुरू हो गया था। कह सकते हैं कि आजादी के बाद दो दशक तक कांग्रेस की जो स्थिति थी, भाजपा आज उस स्थिति में है। केंद्र के साथ साथ वह लगभग पूरे देश में सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत है। दक्षिण भारत को छोड़ दें तो देश के बाकी हिस्से में उसका वर्चस्व कायम हो गया है। पश्चिम बंगाल की जीत ने पूर्वी और उत्तर पूर्वी भारत में भाजपा के वर्चस्व को बहुत मजबूती से स्थापित किया है। कहा नहीं जा सकता है कि यह संयोग है या भाजपा के प्रयोग का नतीजा है कि दो साल के अंदर पूर्वी भारत के तीनों बड़े राज्यों ओडिशा, बिहार और पश्चिम बंगाल में उसका मुख्यमंत्री बना है। ये तीनों राज्य भाजपा के लिए पहेली की तरह थे, जिसे आजादी के 75 साल बाद तक भारतीय जनसंघ या भारतीय जनता पार्टी के नेता सुलझा नहीं सके थे। लेकिन वह पहेली दो साल में सुलझ गई। अब ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल के साथ असम में भाजपा का मुख्यमंत्री है। यह भी संयोग है कि पश्चिम भारत के तीनों बड़े राज्यों राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में भाजपा का अपना मुख्यमंत्री है। गुजरात में तो खैर पिछले 30 साल से भाजपा है और राजस्थान में भी वह काफी समय से जीतती और हारती रही थी। पश्चिम में विंध्य के पार का राज्य महाराष्ट्र उसके लिए पहेली था। शिव सेना के समर्थन से भाजपा को एक बार 1995 में सत्ता का सुख मिला था लेकिन उसके बाद 15 साल सत्ता का सूखा रहा। अब पिछले 12 साल से वहां भाजपा सत्ता में है। उसे 2024 में निर्णायक जीत मिली। वह अकेले दम पर बहुमत के करीब पहुंच गई। ऐसे ही पहले भाजपा को उत्तर भारत की हिंदी पट्टी की पार्टी माना जाता था। लेकिन वहां भी भाजपा निर्णायक रूप से मजबूत नहीं थी। कहीं सहयोगियों के दम पर तो कहीं आधे अधूरे तरीके से उसकी सरकार बन रही थी। परंतु उत्तर प्रदेश में लगातार दो जीत के बाद भाजपा ने हिंदी पट्टी में भी निर्णायक वर्चस्व स्थापित किया है। झारखंड और हिमाचल प्रदेश छोड़ कर हिंदी पट्टी के हर राज्य में भाजपा का मुख्यमंत्री है। भाजपा के अखिल भारतीय वर्चस्व को इस बात से समझ सकते हैं कि उसने भाषायी अस्मिता और भाजपा की राजनीति से सांस्कृतिक भिन्नता वाले राज्यों में भी जीतना शुरू कर दिया है।

इसकी शुरुआत गुजरात से हुई थी, जो बाद में कर्नाटक पहुंची और अब पश्चिम बंगाल में भी भाजपा जीती है। हालांकि दक्षिण का दुर्ग तब तक टूटा नहीं माना जाएगा, जब तक भाजपा तमिलनाडु में नहीं जीतती है। उसे छोड कर बाकी सारे दुर्ग भाजपा ने तोड़ दिए हैं। दक्षिण के अलावा भाषायी अस्मिता वाले राज्यों में एक पंजाब है, जहां अगले साल चुनाव होने वाले हैं। वहां भी भाजपा ने बिसात बिछानी शुरू कर दी है। नतीजा पता नहीं है क्या होगा लेकिन भाजपा ने यह दिखाया है कि परिस्थितियां अनुकूल नहीं होने के नाम पर वह पंजाब को छोड़ने वाली नहीं है।

सो, उत्तर से लेकर पूरब और पश्चिम तक भाजपा ने अपना वर्चस्व स्थापित किया है? अब सवाल है कि क्या उसका यह वर्चस्व इसी तरह कायम रहेगा या चरम पर पहुंचने के बाद इसमें गिरावट आएगी? यह प्रकृति का नियम है कि जिसका उत्थान होता है उसका पतन भी होता है। तभी यह भी कहा जाता है कि शीर्ष पर पहुंचना आसान है, वहां लंबे समय तक बने रहना मुश्किल होता है। भाजपा शीर्ष पर पहुंच गई है वहां कितने समय तक बनी रहती है यह देखने वाली बात होगी। भाजपा कितने समय तक शीर्ष पर बनी रहेगी यह दो बातें पर निर्भर करेगा। पहला, अपने पतन का कारण वह स्वंय बनती है या कोई वैकल्पिक राजनीतिक ताकत उभरती है, जिसकी वजह से भाजपा का पराभव शुरू होता है। हालांकि यह अभी तत्काल नहीं होने जा रहा है। भाजपा अगले कई दशक तक भारतीय राजनीति की केंद्रीय ताकत बनी रहने वाली है। जैसे आजादी के बाद राज्यों में कांग्रेस के हारने का सिलसिला 1967 में और केंद्र में हारने का सिलसिला 1977 में शुरू हुआ था लेकिन वह उसके बाद भी कई दशक तक भारतीय राजनीति की केंद्रीय ताकत बनी रही थी। असल में भारतीय जनता पार्टी ने चुनावी राजनीति को इस कदर साध लिया है कि उसे हराना नामुमकिन होता जा रहा है। एक समय राजनीति को क्रिकेट के बाद सबसे ज्यादा अनिश्चितता का खेल माना जाता था। बहुत दिलचस्प है कि एक समय ऑस्ट्रेलिया की क्रिकेट टीम ने क्रिकेट की अनिश्चितता को समाप्त कर दिया था। वह टीम इतनी मजबूत हो गई थी कि जब वह खेलने उतरती थी तो माना जाता था कि वही जीतेगी। अगर वह हारती भी थी तो उसे अपवाद की तरह देखा जाता था। क्रिकेट में जुनून की हद तक रूचि रखने वाले हिंदी के विलक्षण पत्रकार प्रभाष जोशी ऑस्ट्रेलिया के इस वर्चस्व की बड़ी आलोचना करते थे।

उनका कहना था कि ऑस्ट्रेलिया ने क्रिकेट की सिर्फ अनिश्चितता को खत्म नहीं किया है, बल्कि इसके सौंदर्य को भी समाप्त कर दिया है। वे मानते थे कि ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी आते हैं और उसी तरह से खेल को आगे बढ़ाते हैं, जैसे कोई राजमिस्त्री किसी इमारत की तामीर करता है। जिस तरह नब्बे के दशक के आखिरी दिनों से लेकर नई सदी के पहले दशक के शुरुआती दिन तक की ऑस्ट्रेलिया की क्रिकेट टीम ने खेल के रोमांच, उसकी रोचकता, अनिश्चितता और सौंदर्य को समाप्त कर दिया था उसी तरह भाजपा ने देश की राजनीति से इन तत्वों को समाप्त कर दिया है।

भाजपा चुनाव लड़ने उतरती है तो माना जाता है कि वह जीतेगी। अगर वह हारती है तो उसे एक अपवाद के तौर पर देखा जाता है। ऐसा लग रहा है कि भाजपा ने चुनाव जीतने का ऐसा फॉर्मूला हासिल कर लिया है, जिसकी काट किसी के पास नहीं है। जैसे कोई सधा हुआ राजमिस्त्री इमारत की तामीर करता है वैसे ही भाजपा ईंट पर ईंट जोड़ते हुए जीत की तामीर करती है। कांग्रेस अपने वर्चस्व के दिनों में भी ऐसा नहीं करती थी। उसकी किसी बड़ी रणनीति से जीत हासिल नहीं होती थी। कांग्रेस की जीत व्यापक रूप से आजादी की लड़ाई की विरासत, मजबूत विकल्प की अनुपलब्धता और नेताओं के करिश्मे की वजह से होती थी। भाजपा के पास इनमें से सिर्फ एक चीज है नरेंद्र मोदी का करिश्मा। बाकी चीजें उसने खुद विकसित की है। उसने चुनाव लड़ने की विधा को साधा है। नेतृत्व के करिश्मे के साथ साथ उसने संगठन और संसाधन के मामले में अपने को इतना मजबूत किया है उसे हराना नामुमकिन की हद तक मुश्किल हो गया है। कांग्रेस के पास जैसे आजादी की विरासत थी और उसका नैरेटिव था, उसकी जगह भाजपा ने अपना वैकल्पिक विचार प्रस्तुत किया है। कांग्रेस के आइडिया ऑफ इंडिया के बरक्स उसने अपना आइडिया प्रस्तुत किया है। उसके गुणदोष पर अलग अलग राय हो सकती है लेकिन अभी वह आइडिया भारत के लोग स्वीकार कर रहे हैं। इससे समाज में एक विभाजन बन रहा है, सामाजिक स्तर पर एक ऐसी फॉल्टलाइन क्रिएट हो रही है, जो आगे चल कर देश के लिए खतरा बन सकती है। लेकिन अभी उसका राजनीतिक लाभ भाजपा को मिल रहा है। जिस तरह से पश्चिम बंगाल और असम में जनसंख्या संरचना के आधार पर 70 बनाम 30 की राजनीति हुई और उत्तर प्रदेश में 80 बनाम 20 की राजनीति का बिगुल बज चुका है वैसे ही देश के स्तर पर 80 बनाम 20 का मुद्दा बनना अभी बाकी है। सो, कह सकते हैं कि भाजपा की राजनीति का चरम अभी आना बाकी है, इसलिए अभी तत्काल तो ढलान शुरू होने के आसार नहीं हैं।

-अजीत द्विवेदी

चुनाव परिणामों ने दिखाया नया राजनीतिक ट्रेंड!

पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरलम, असम और पुडुचेरी में संपन्न विधानसभा चुनावों के नतीजों ने कांग्रेस और उसके सहयोगियों के लिए मिला जुला चित्र प्रस्तुत किया है। कुछ राज्यों में पार्टी को निराशा हाथ लगी, जबकि कुछ क्षेत्रों में उसे उल्लेखनीय सफलता भी मिली। इन चुनावों का एक महत्वपूर्ण पक्ष मुस्लिम उम्मीदवारों का प्रदर्शन रहा, जिसने कई राज्यों में राजनीतिक समीकरणों को नई दिशा दी है। खास तौर पर असम और केरलम में कांग्रेस तथा उसके सहयोगी दलों के मुस्लिम प्रत्याशियों ने प्रभावशाली जीत दर्ज कर यह संकेत दिया है कि इन इलाकों में मुस्लिम मतदाताओं का भरोसा अभी भी इस गठबंधन के साथ बना हुआ है। केरलम में कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा ने दस वर्षों के लंबे अंतराल के बाद सत्ता में वापसी की। राज्य में चुने गए 35 मुस्लिम विधायकों में से 30 संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा से संबंधित हैं। इनमें कांग्रेस के आठ और इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के 22 विधायक शामिल हैं। यह परिणाम बताता है कि राज्य में मुस्लिम मतदाताओं ने संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा पर व्यापक भरोसा जताया। इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग की उम्मीदवार फातिमा तहलिया की जीत विशेष रूप से चर्चा में रही। उन्होंने

कोझिकोड जिले की पेराम्ब्रा सीट पर माकपा नेता टीपी रामकृष्णन को पांच हजार से अधिक मतों से हराया। इस जीत के साथ वह पार्टी की पहली मुस्लिम महिला विधायक बन गईं। उनकी सफलता को मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। असम में कांग्रेस के मुस्लिम उम्मीदवारों का प्रदर्शन और भी अधिक प्रभावशाली रहा। पार्टी ने राज्य में 20 मुस्लिम उम्मीदवार उतारे थे, जिनमें से 18 ने जीत दर्ज की। इसके विपरीत कांग्रेस के अधिकांश गैर मुस्लिम उम्मीदवार हार गए और केवल एक गैर मुस्लिम प्रत्याशी को सफलता मिली। कांग्रेस ने कुल 101 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मुस्लिम उम्मीदवारों की सफलता दर अत्यंत ऊंची रही। कांग्रेस के सहयोगी रायजोर दल को भी दो सीटों पर जीत मिली, जिनमें एक मुस्लिम उम्मीदवार की थी, जबकि दूसरी सीट अखिल गोगोई ने जीती। अखिल गोगोई पर राष्ट्रीय जांच एजेंसी द्वारा माओवादी गतिविधियों से जुड़े आरोपों की जांच चल रही है। असम में कई सीटों पर कांग्रेस उम्मीदवारों ने भारी अंतर से जीत दर्ज की। गौरिपुर सीट पर कांग्रेस के अब्दुल सोबहान अली सरकार ने भाजपा समर्थित उम्मीदवार निजानुर रहमान को 19097 मतों से हराया। जलेश्वर सीट पर कांग्रेस के आफताब मोल्ला ने एआईयूडीएफ नेता शेख आलम को 109688 मतों के भारी अंतर से पराजित किया। समागुरी में तंजिल हुसैन ने भाजपा के अनिल सैकिया को 108310 मतों से हराया। इसके अलावा अलगापुर कटलीछड़ा जैसी सीटों पर भी कांग्रेस उम्मीदवारों की जीत का अंतर एक लाख से अधिक रहा। इन परिणामों ने यह संकेत दिया कि असम के कई क्षेत्रों में मुस्लिम मतदाता कांग्रेस के पक्ष में मजबूती से एकजुट हुए। हालांकि असम में कांग्रेस की इस सफलता के बावजूद एआईयूडीएफ प्रमुख मौलाना बदरुद्दीन अजमल ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने एआईयूडीएफ को खत्म करने की कोशिश की, लेकिन अब स्वयं समाप्त हो गई है। अजमल ने यह भी कहा कि कांग्रेस अब मुस्लिम लीग बन गई है और यह स्थिति उन्हें दुखी करती है। उनका यह बयान असम की राजनीति में मुस्लिम मतों को लेकर चल रही प्रतिस्पर्धा को दर्शाता है। हम आपको यह भी याद दिला दें कि चुनाव प्रचार के दौरान असम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए उसे "माओवादी मुस्लिम लीग कांग्रेस" करार दिया था। आखिरकार उनकी बात सही साबित हुई।

वहीं पश्चिम बंगाल में कांग्रेस को केवल दो सीटों पर जीत मिली, लेकिन दोनों सीटें मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से थीं। पार्टी ने तृणमूल कांग्रेस की तुलना में अधिक मुस्लिम उम्मीदवार उतारे थे। वहीं तमिलनाडु में कांग्रेस ने दो मुस्लिम उम्मीदवार मैदान में उतारे, जिनमें से एक को जीत मिली। इन परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस ने कई राज्यों में मुस्लिम समुदाय को साधने की रणनीति अपनाई थी और कुछ स्थानों पर उसे इसका लाभ भी मिला।

बंगाल में आखिर हुआ क्या!

चुनाव का नैतिक सवाल आंकड़ों से बड़ा है। भाजपा के अनेक आलोचकों का प्रश्न यह नहीं कि ममता बनर्जी हार की हकदार थीं या नहीं? उनकी चिंता कुछ और है—क्या भारत में चुनाव अब ऐसे मुकाबले बनते जा रहे हैं जहां भारी वित्तीय शक्ति, मीडिया प्रभुत्व, केंद्रीय संस्थागत प्रभाव और सामाजिक ध्रुवीकरण मतदान से बहुत पहले परिणामों की दिशा तय कर देते हैं? इस दृष्टि में बंगाल एक चेतावनी है। 2026 के पश्चिम बंगाल चुनाव में ममता बनर्जी की हार पर बहस वर्षों चलेगी। केवल इसलिए नहीं कि एक सरकार सत्ता से बाहर हुई, बल्कि इसलिए कि भारत अब इस सवाल पर बंट चुका है कि वास्तव में हुआ क्या। एक पक्ष इसे पंद्रह वर्षों की थकान, भ्रष्टाचार, आर्थिक जड़ता और राजनीतिक अहंकार के बाद सत्ता के लोकतांत्रिक हस्तांतरण के रूप में देखता है। दूसरा पक्ष इसमें कुछ अधिक अंधेरा देखता है—ऐसा चुनाव जिसमें धन, मीडिया, संस्थागत ताकत, मतदाता सूची विवाद, अर्धसैनिक उपस्थिति और लगातार ध्रुवीकरण की असमान शक्ति ने मुकाबले को बराबरी का नहीं रहने दिया। उनके अनुसार यह केवल मनाने से नहीं, बल्कि दबाव और वर्चस्व से हासिल की गई जीत थी। संभव है आने वाले वर्षों में यही विभाजन भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी राजनीतिक बहसों में बदल जाए। हार की रूपरेखा अब लगभग साफ है। वे टिप्पणीकार भी, जिन्होंने कभी ममता बनर्जी की राजनीतिक सूझबूझ की प्रशंसा की थी—जैसे प्रताप भानु मेहता, आशीष नंदी, शेखर गुप्ता, रामचंद्र गुहा या जवाहर सरकार—विभिन्न समयों पर बंगाल में धीरे-धीरे बढ़ती संस्थागत सड़ांध की ओर संकेत कर चुके थे। प्रशासनिक विश्वसनीयता सिकुड़ती गई। स्थानीय शासन का राजनीतिकरण बढ़ा। कैडर संस्कृति सत्ता का पर्याय बनने लगी। भ्रष्टाचार, डराने-धमकाने और आलोचना के प्रति असहिष्णुता की शिकायतें सामान्य होती चली गईं। ममता बनर्जी 2011 में एक थकी हुई व्यवस्था को ध्वस्त करने वाली नेता के रूप में सत्ता में आई थीं। उनकी पहली जीत चुनावी होने से पहले नैतिक थी। उन्होंने उस वाम मोर्चे को हराया था जिसने तीन दशक से अधिक समय तक बंगाल पर शासन किया था और जो धीरे-धीरे जड़ता का पर्याय बन चुका था। ममता ने वादा किया था—सम्मान

लौटाने का, पहुंच योग्य शासन का, बंगाली अस्मिता का और वैचारिक नौकरशाही से मुक्ति का। लाखों लोगों के लिए वे ठहराव के बाद गति का नाम थीं। लेकिन आंदोलनों की एक त्रासदी होती है। वे अक्सर उसी व्यवस्था का प्रतिबिंब बनने लगते हैं जिसे वे हटाते हैं। समय के साथ तृणमूल कांग्रेस आंदोलन से मशीन में बदलती गई। जिलों में पार्टी संरचनाएं धीरे-धीरे संरक्षण नेटवर्क जैसी दिखने लगीं। आलोचकों ने बंगाल के कई हिस्सों के प्रशासन को भय, निष्ठा और पहुंच पर टिके संरक्षण-तंत्र के रूप में वर्णित किया। कट-मनी राजनीति, भर्ती घोटाले, नगरपालिकाओं में भ्रष्टाचार—इन सबके आरोप बढ़ते गए। प्रतिरोध की भाषा अधिकारबोध की भाषा में बदलती चली गई। जो कभी आंदोलन था, उसमें स्थायित्व का अहंकार उतरने लगा। वैचारिक सीमाओं से परे कई विश्लेषकों ने एक और बदलाव नोट किया। कल्याणकारी राजनीति ममता बनर्जी की वैधता का केंद्रीय स्तंभ बन गई। नकद सहायता और सामाजिक योजनाओं के कारण महिलाओं और गरीब मतदाताओं में उनका मजबूत आधार बना रहा। वर्षों तक यही उन्हें सत्ता-विरोधी माहौल से बचाता रहा। दूसरा बड़ा जनादेश काफी हद तक इसी कल्याणकारी वितरण पर टिका था। 2021 की तीसरी जीत अलग थी। वह भाजपा के आक्रामक हिंदुत्व विस्तार और बंगाली सांस्कृतिक क्षेत्र में कथित बाहरी दखल के खिलाफ जनमत-संग्रह बन गई थी। उस चुनाव के बाद ममता लगभग अजेय दिखाई देने लगी थीं। लेकिन बंगाल की अर्थव्यवस्था की गहरी कहानी वहीं की वहीं रही। कभी भारत के सबसे समृद्ध और बौद्धिक रूप से सबसे जीवंत क्षेत्रों में गिने जाने वाले पश्चिम बंगाल ने दशकों से लगातार गिरावट देखी। 1960 और 1970 के दशक के बाद भारत की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में उसकी हिस्सेदारी लगातार घटी। पूंजी पलायन, श्रमिक उग्रता, नीति जड़ता, उद्योगों का कमजोर पुनर्निर्माण और लगातार राजनीतिक केंद्रीकरण ने मिलकर ऐसा राज्य बनाया जो धीरे-धीरे स्मृतियों पर जीने लगा। प्रति व्यक्ति आय की रैंकिंग फिसलती गई। बड़े उद्योग लौटकर नहीं आए। जो राज्य कभी खुद को भारत की आधुनिक बौद्धिक अग्रिम पंक्ति मानता था, वह अतीत की ओर चिंतित निगाहों से देखने लगा। यह त्रासदी दलगत होने से पहले ऐतिहासिक है। पचास वर्ष पहले कांग्रेस के पतन ने एक लंबा चक्र शुरू किया था—वैचारिक प्रभुत्व, फिर संस्थागत थकान। वामपंथ ने गिरावट विरासत में पाई और उसके कुछ हिस्सों को और गहरा किया। ममता बनर्जी ने थकान विरासत में पाई और उसे व्यक्तिवादी सत्ता में बदल दिया। बंगाल धीरे-धीरे ऐसा प्रदेश बनता गया जहां राजनीतिक ऊर्जा पुनर्निर्माण से अधिक संघर्ष में खर्च होने लगी। भाजपा ने इसी खालीपन को पहचाना। बंगाल में उसका उभार केवल दूसरे राज्यों की शासन सफलताओं पर नहीं टिका था। ममता के आलोचक भी मानते हैं कि भाजपा ने असाधारण संगठनात्मक अनुशासन, कथा-नियंत्रण और रणनीतिक धैर्य दिखाया। लेकिन तृणमूल समर्थकों और कई स्वतंत्र पर्यवेक्षकों का कहना है कि 2026 के चुनाव में असमानता का पैमाना इतना बड़ा था कि मुकाबले की प्रकृति ही बदल गई। मतदाता सूची संशोधन का विवाद चुनाव के केंद्र में आ गया। विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) प्रक्रिया को लेकर आरोपों ने अभियान पर कब्जा कर लिया। आलोचकों का दावा था कि लाखों नाम हटाए गए और इसका असर असमान रूप से अल्पसंख्यकों तथा कमजोर तबकों पर पड़ा। भाजपा ने इसे मतदाता सूची की सफाई और प्रशासनिक सुधार बताया। ममता बनर्जी ने चुनाव को "लोकतंत्र की हत्या" कहा और आरोप लगाया कि सौ से अधिक सीटें संस्थागत हेरफेर, मतदाता विलोपन और डराने की राजनीति से छीनी गईं। भाजपा ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि परिणाम भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पहचान की राजनीति और प्रशासनिक पतन के खिलाफ जनता के संचित गुस्से का नतीजा है। कई विश्लेषणों ने अल्पसंख्यक वोटों के बिखराव, महिला मतदाताओं में गिरावट और पंद्रह साल की सत्ता-विरोधी भावना की ओर भी इशारा किया। लेकिन चुनाव का नैतिक सवाल आंकड़ों से बड़ा है। भाजपा के अनेक आलोचकों का प्रश्न यह नहीं कि ममता बनर्जी हार की हकदार थीं या नहीं। उनमें से कई खुलकर मानते हैं कि वे अपनी गलतियों से कमजोर हुईं। उनकी चिंता कुछ और है—क्या भारत में चुनाव अब ऐसे मुकाबले बनते जा रहे हैं जहां भारी वित्तीय शक्ति, मीडिया प्रभुत्व, केंद्रीय संस्थागत प्रभाव और सामाजिक ध्रुवीकरण मतदान से बहुत पहले परिणामों की दिशा तय कर देते हैं? इस दृष्टि में बंगाल एक चेतावनी है। इसलिए नहीं कि ममता हारीं, बल्कि इसलिए कि तरीके सामान्य होते जा रहे हैं। राजनीतिक चर्चाओं में बार-बार सुनाई देने वाला वाक्य—"मनी, मीडिया और मसल"—इसी डर को व्यक्त करता है। कुछ विश्लेषणों ने इन "तीन एम" के साथ अर्धसैनिक तैनाती को भी चुनाव का निर्णायक बल-वर्धक बताया। भाजपा समर्थकों को यह आलोचना चयनात्मक और पाखंडी लगती है। वे याद दिलाते हैं कि बंगाल में हिंसा, कैडर दबाव और राजनीतिक संरक्षण की संस्कृति वामपंथ और तृणमूल—दोनों के दौर में मौजूद रही है। उनके अनुसार भाजपा ने केवल उसी जमीन पर लड़ना सीखा जो पहले से बनी हुई थी। उनकी कथा में ममता की हार एक भ्रष्ट क्षेत्रीय व्यवस्था के पतन की कहानी है, जो लोकतांत्रिक जवाबदेही का सामना नहीं कर सकी। यही कारण है कि बंगाल के फैसले ने दो समानांतर सच पैदा किए हैं। एक सच में लोकतंत्र ने काम किया। थकी हुई सरकार वर्षों के असंतोष के बाद हार गई। मतदाताओं ने बदलाव चुना। एक प्रभावशाली क्षेत्रीय नेता चुनावी लामबंदी से पराजित हुई। दूसरे सच में लोकतंत्र औपचारिक रूप से बचा रहा, लेकिन लोकतांत्रिक समानता की शर्तें कमजोर हो गईं। चुनाव में मतपत्र थे, पर्यवेक्षक थे, मतगणना केंद्र थे—फिर भी आलोचकों को वह ऐसा प्रबंधित प्रदर्शन लगा जिसमें शक्ति का असंतुलन ही परिणाम का हिस्सा बन चुका था।

-सतीश झा

`तीस्ता प्रोजेक्ट में हमारी मदद करो', बांग्लादेशी विदेश मंत्री ने चीन से की मांग, भारत की बढ़ेगी टेंशन

एजेंसी बीजिंग

तारिक रहमान के नेतृत्व वाली बांग्लादेश सरकार ने तीस्ता नदी पुनरुद्धार परियोजना के लिए औपचारिक रूप से चीन से समर्थन मांगा है। यह कदम भारत और बांग्लादेश के संबंधों पर असर डाल सकता है। बांग्लादेश की सरकारी समाचार एजेंसी 'बांग्लादेश संगबाद संस्था' (बीएसएस) के अनुसार, बांग्लादेश के विदेश मंत्री खलीलुर रहमान और चीन के उनके समकक्ष वांग यी के बीच बुधवार को बीजिंग में हुई बैठक में तीस्ता नदी व्यापक प्रबंधन एवं पुनरुद्धार परियोजना (टीआरसीएमआरपी) से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। तीस्ता नदी पूर्वी हिमालय से निकलकर सिक्किम और पश्चिम बंगाल से होते हुए बांग्लादेश में प्रवेश करती है, जहां यह सिंचाई एवं लाखों लोगों की आजीविका का प्रमुख स्रोत है। बांग्लादेश की नई सरकार के प्रति समर्थन व्यक्त करते हुए वांग ने कहा कि द्विपक्षीय संबंध बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों की कसौटी पर खरे उतरे हैं और निरंतर अधिक परिपक्व और स्थिर हुए हैं। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, वांग ने कहा कि चीन बांग्लादेश की स्वतंत्रता, संप्रभुता और राष्ट्रीय गरिमा के साथ ही उसके लोगों द्वारा चुने गए विकास मार्ग और राजनीतिक प्रणाली का भी सम्मान करता है, और ढाका को स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने में समर्थन देता है। उन्होंने यह भी कहा कि चीन के बांग्लादेश और अन्य दक्षिण एशियाई देशों के साथ संबंध किसी तीसरे पक्ष को लक्षित नहीं करते, और न ही इन्हें किसी तीसरे पक्ष से प्रभावित होना चाहिए। यह टिप्पणी स्पष्ट रूप से ढाका और बीजिंग के बीच घनिष्ठ संबंधों को लेकर भारत की चिंताओं की ओर इशारा करती है। वांग ने कहा कि सरकार चीन की कंपनियों को बांग्लादेश में निवेश के लिए भी प्रोत्साहित करेगी।

तारिक रहमान के फरवरी में सत्ता संभालने के बाद यह बांग्लादेशी विदेश मंत्री की चीन की पहली यात्रा है। वह पांच मई को यहां पहुंचे और बृहस्पतिवार को यहां से रवाना होंगे।खलीलुर रहमान पिछले महीने भारत आए थे। भारतीय नेताओं के साथ उनकी वार्ता पर बीजिंग में करीबी नजर रखी गई, क्योंकि शेख हसीना के सत्ता से हटाने के बाद मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार चीन और पाकिस्तान के करीब आई थी और बांग्लादेश और भारत के संबंधों में तनाव आ गया था।
चीन कई वर्ष से टीआरसीएमआरपी के विकास में रुचि दिखाता रहा है, जो भारत के संवेदनशील सिलीगुड़ी गलियारे के पास स्थित है। यह इसकी मुख्य भूमि को पूर्वोत्तर राज्यों से जोड़ता है। इस पृष्ठभूमि में भारत ने 2024 में तीस्ता बेसिन के लिए तकनीकी और संरक्षण सहायता की पेशकश की थी जो सीमा-पार नदी प्रबंधन पर ढाका के साथ सहयोग बढ़ाने के नयी दिल्ली के प्रयासों को दर्शाता है। जल बंटवारा द्विपक्षीय संबंधों में एक प्रमुख मुद्दा बना हुआ है और गंगा नदी के शुष्क मौसम में जल बंटवारे को नियंत्रित करने के लिए 1996 में 30 वर्ष के लिए हस्ताक्षरित भारत-बांग्लादेश गंगा जल संधि को यदि नवीनीकृत नहीं किया गया तो यह इस वर्ष समाप्त होने वाली है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब हाल के वर्षों में चीन ने बांग्लादेश में अपनी आर्थिक एवं कूटनीतिक उपस्थिति का विस्तार किया है।

किसने कहा कि अंग्रेजी में बातचीत करो, पाक सेना को भारतीय सैन्य अधिकारियों की भाषा पर भी तकलीफ

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तानी सेना ने ऑपरेशन सिंदूर की सालगिरह पर भारतीय सैन्य अधिकारियों की अंग्रेजी में की गई प्रेस कॉन्फ्रेंस पर आपत्ति जताई है। इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशन (ISPR) के डायरेक्टर जनरल लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने पूछा है कि उनसे किसने कहा कि अंग्रेजी में प्रेस कॉन्फ्रेंस करें। उन्होंने आरोप लगाया कि भारतीय सैन्य अधिकारियों ने अंग्रेजी में प्रेस कॉन्फ्रेंस इसलिए की है, ताकि वे दुनिया को बताना चाहते हैं कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान क्या हुआ था। रावलपिंडी में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान पाकिस्तान सेना के डीजी, आईएसपीआर लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने कहा, "अभी थोड़ी देर पहले इनके डीजीएमओ और डीजी एयर ऑपरेशन और सीनियर अफसरान। पहली बात तो ये कि तुम्हें किसने कहा कि अंग्रेजी में बातचीत करो। इसलिए, क्योंकि तुम सुनाना चाहते हो दुनिया को कि ये हुआ था, ये हुआ था।" भारतीय सेना ने गुरुवार को ऑपरेशन सिंदूर की पहली वर्षगांठ पर पाकिस्तान को स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि नियंत्रण रेखा के पार कोई भी आतंकी ठिकाना सुरक्षित नहीं है और भारत अपनी इच्छानुसार समय और तरीके से हर आतंकी ढांचे को निशाना बनाएगा। ऑपरेशन सिंदूर के एक वर्ष पूरे होने पर भारतीय वायुसेना, नौसेना और थलसेना के सैन्य अभियानों के प्रमुखों ने जयपुर में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए ऑपरेशन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। सेना के उप प्रमुख (रणनीति) लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने कहा, "नियंत्रण रेखा के उस पार कोई भी ठिकाना सुरक्षित नहीं है। हम हर जगह हमला करेंगे। हम हर निशाने पर प्रहार करेंगे। हम हर उस चीज के खिलाफ कार्रवाई करेंगे, यह बात प्रधानमंत्री ने पिछले साल साफ कर दी थी। लेकिन इसकी शर्तें, समय और तरीका हमारा होगा।" उन्होंने कहा कि आतंकी ढांचे को निशाना बनाने का समय और तरीका भारतीय सेना के विवेक पर निर्भर करेगा। भारतीय सेना के सैन्य अभियानों के महानिदेशक के रूप में, घई ने भारतीय वायु सेना और नौसेना के अपने समकक्षों के साथ मिलकर ऑपरेशन सिंदूर के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के जवाब में भारत ने पिछले साल सात मई को 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया। इसके तहत भारत ने पाकिस्तान और इसके कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में स्थित नौ आतंकी ठिकानों पर हवाई हमले किए, जिसमें कम से कम 100 आतंकी मारे गए। इस कार्रवाई से पाकिस्तान के साथ तनाव में तेजी से वृद्धि हुई और पाकिस्तान ने जवाबी हमले किए, हालांकि उनमें से अधिकांश को भारतीय सेना ने विफल कर दिया। दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों के बीच हॉटलाइन पर बातचीत के बाद 10 मई को सैन्य कार्रवाई रोकने पर सहमति बनने के साथ ही सैन्य संघर्ष समाप्त हो गया, लेकिन इस घटना ने भारत की सैन्य शक्ति को बढ़ाने की आवश्यकता को उजागर कर दिया।

असम से बंगाल तक भारतीय सीमा पर अलर्ट हुए बांग्लादेशी सुरक्षा गार्ड, हिमंत बिस्वा सरमा के ऐलान का खौफ

एजेंसी ढाका

बांग्लादेश ने भारत के दो सीमावर्ती राज्यों में विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की जीत के बाद सीमा पर चौकसी बढ़ा दी है। रिपोर्ट के अनुसार, बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (BGB) ने जशोर में बेनापोल सीमा पर सुरक्षा और निगरानी कड़ी की है। बांग्लादेशी मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, जशोर-49 BGB और खुलना-21 BGB के अधिकार क्षेत्र में आने वाले लगभग 102 किलोमीटर के सीमावर्ती इलाकों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था लागू कर दी गई है। बांग्लादेश को आशंका है कि इन दोनों राज्यों में बीजेपी की जीत के बाद अवैध घुसपैठियों को बांग्लादेश की सीमा में ढकेला जा सकता है। प्रोथोम आलो की रिपोर्ट के मुताबिक, जशोर-49 BGB बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर, लेफ्टिनेंट कर्नल गुलाम मोहम्मद सैफुल आलम खान ने कहा कि बल सभी प्रकार की घुसपैठ और सीमा पार अपराधों को रोकने के लिए हाई अलर्ट पर है। बेनापोल में रघुनाथपुर, शिकारपुर, सादीपुर, घीबा, पुतखाली, गोगा, दौलतपुर और रुद्रपुर सहित कई सीमा चौकियों पर BGB के अतिरिक्त जवानों को तैनात किया गया है। इन इलाकों में गश्त और चौबीसों घंटे निगरानी भी बढ़ा दी गई है। रिपोर्ट में बताया गया है कि बांग्लादेशी अधिकारियों ने लोगों को सीमावर्ती इलाकों के पास अनावश्यक आवाजाही न करने की भी चेतावनी दी है, खासकर रात के समय। कर्नल गुलाम मोहम्मद ने कहा, "सीमा पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी घुसपैठिया भारत से बांग्लादेश में प्रवेश न कर सके। अतिरिक्त गश्त के उपायों को भी मजबूत किया गया है।" सूत्रों ने बताया कि चुनावों के बाद पश्चिम बंगाल की स्थिति को देखते हुए सुरक्षा बढ़ाई गई है। इसके अलावा, चापाइनवाबगंज में 140 किलोमीटर लंबी सीमा पर BGB को हाई अलर्ट पर रखा गया है। 53 BGB बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल काजी मुस्तफिजुर रहमान ने कहा कि BGB कड़ी निगरानी रख रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भारत का सीमा सुरक्षा बल (BSF) किसी को भी अवैध रूप से बांग्लादेश में धकेल न सके। उन्होंने कहा कि सीमा पर गश्त और खुफिया गतिविधियों को तेज कर दिया गया है, जबकि स्थानीय निवासियों से सतर्क रहने को कहा गया है। उन्होंने आगे कहा कि आपातकालीन उद्देश्यों को छोड़कर, 'जीरो लाइन' (सीमा रेखा) के पास आवाजाही प्रतिबंधित कर दी गई है। बांग्लादेश को आशंका है कि पश्चिम बंगाल और असम में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद अवैध घुसपैठियों को वापस उनके देश भेजा जा सकता है। चूंकि, बांग्लादेश की सरकार भारत में अवैध रूप से प्रवेश करने वाले अपने नागरिकों की पुष्टि करने से आनाकानी कर रही है। 2000 से अधिक घुसपैठियों की पहचान की पुष्टि लंबित है। ऐसे में बांग्लादेश को आशंका है कि भारत इन लोगों को उसकी सीमा में पुश इन कर सकता है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर काफी सख्त हैं।

दुश्मन की हर चाल पर नजर! भारत-इजराइल की नई डिफेंस डील, तमिलनाडु में बनेंगे दुनिया के एडवांस रडार सिस्टम

एजेंसी नई दिल्ली

भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए बेंगलुरु स्थित एयरोस्पेस कंपनी DCX सिस्टम्स और इजरायल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (IAI) की एल्टा सिस्टम्स ने तमिलनाडु में अत्याधुनिक रडार निर्माण संयंत्र की शुरुआत कर दी है। दोनों कंपनियों के संयुक्त उद्यम ELTX सिस्टम्स के तहत बनने वाला यह प्लांट भारत के रक्षा उत्पादन क्षेत्र में नई तकनीकी ताकत जोड़ने वाला माना जा रहा है। तमिलनाडु के शूलागिरी इंडस्ट्रियल एरिया में इसका भूमिपूजन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें दोनों कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने हिस्सा लिया। दि प्रिंट में प्रकाशित खबर के अनुसार, इस रडार निर्माण सुविधा का निर्माण कार्य अप्रैल 2027 तक पूरा होने की उम्मीद है। इसके बाद यहां उत्पादन भी शुरू कर दिया जाएगा। यह प्लांट अत्याधुनिक एयरबोर्न और ग्राउंड-बेस्ड रडार सिस्टम के निर्माण, इंटीग्रेशन और टेस्टिंग का प्रमुख केंद्र बनेगा। इसमें स्केलेबल इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ हाई सिक्योरिटी और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों का पालन किया जाएगा ताकि भविष्य की सैन्य जरूरतों को पूरा किया जा सके। IAI के प्रेसिडेंट और CEO बोअज लेवी ने कहा कि यह परियोजना भारत में कंपनी की बढ़ती गतिविधियों का बड़ा उदाहरण है और यह पूरी तरह भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' नीति के अनुरूप है। उन्होंने कहा कि भारतीय उद्योगों के साथ साझेदारी के जरिए रक्षा क्षेत्र में स्थानीय निर्माण और तकनीकी विकास को गति मिलेगी। लेवी ने कहा कि भारत और इजराइल के बीच रणनीतिक साझेदारी लगातार मजबूत हो रही है और यह प्रोजेक्ट उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। स्वदेशी निर्माण के साथ टेक्नोलॉजी ट्रांसफर पर जोर DCX सिस्टम्स के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. एच.एस. राघवेंद्र राव ने कहा कि यह संयुक्त उद्यम वैश्विक तकनीकी विशेषज्ञता और भारतीय निर्माण क्षमताओं का बेहतरीन संगम है। उनके मुताबिक नई सुविधा से रक्षा उपकरणों की डिलीवरी तेज होगी, स्थानीय स्तर पर वैल्यू एडिशन बढ़ेगा और राष्ट्रीय रक्षा जरूरतों के अनुरूप उत्पादन को मजबूती मिलेगी। इस साझेदारी का लक्ष्य भारतीय सशस्त्र बलों के कई कार्यक्रमों को समर्थन देना और हाई-एंड डिफेंस टेक्नोलॉजी का ट्रांसफर सुनिश्चित करना है। इजराइल की प्रमुख एयरोस्पेस और एविएशन कंपनी IAI पिछले चार दशकों से भारतीय रक्षा बलों के साथ काम कर रही है। कंपनी ने हाल के वर्षों में भारत में अपने निवेश को तेजी से बढ़ाया है। IAI ने अपनी भारतीय सब्सिडियरी एयरोस्पेस सर्विसेज इंडिया की शुरुआत की, IIT दिल्ली के साथ साझेदारी की और इनोवेशन एक्सेलेरेटर प्रोग्राम के जरिए डीप-टेक स्टार्टअप्स के साथ भी सहयोग शुरू किया है। इसके अलावा हैदराबाद में एडवांस रडार सिस्टम के लिए एक आधुनिक MRO (मेंटेनेंस, रिपेयर एंड ओवरहॉल) सुविधा भी शुरू की गई है।

हिंद महासागर की सुरक्षा में हम हैं `अटल स्तंभ', ग्लोबल साउथ के लिए भारत का बड़ा संदेश

एजेंसी नई दिल्ली

10वां हिंद महासागर संवाद गुरुवार से नई दिल्ली में शुरू हुआ। इसकी शुरुआती सत्र में बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने मुख्य संबंधोन दिया। इस दौरान उन्होंने हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा के प्रति भारत के उत्तरदायित्व के बारे में बात की। भारत 2025–27 तक इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) की अध्यक्षता कर रहा है। विदेश मंत्रालय के अनुसार 10वां इंडियन ओशन डायलोग 'इंडियन ओशन रीजन इन ए ट्रांसफॉर्मिंग वर्ल्ड' की थीम पर आयोजित किया गया है।
हिंद महासागर संवाद में 5 मुख्य मुद्दों पर चर्चा इस डायलोग में पूरे हिंद महासागर क्षेत्र में मैरीटाइम सिक्योरिटी, ब्लू इकोनॉमी, क्लाइमेट रेजिलिएंस, कनेक्टिविटी और रीजनल कोऑपरेशन से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होनी है।10वां इंडियन ओशन डायलोग भारत की चेयरमैनशिप की थीम चार बिंदुओं पर आधारित है-
इनोवेशन
ओपननेस
रेजिलिएंस
एडप्टिबिलिटी
'भारत हिंद महासागर क्षेत्र का मजबूत स्तंभ'
अपने संबोधन में बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा कि 'आज भारत(हिंद महासागर क्षेत्र में) स्थिरता के एक मजबूत स्तंभ बनकर खड़ा है, जो साझा जल-क्षेत्रों में किसी भी संकट की स्थिति में तत्काल सहायता और सुरक्षा की गारंटी देता है।' ग्लोबल साउथ के भविष्य को लेकर भारत का संदेश केंद्रीय मंत्री के अनुसार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत पूरी सक्रियता के साथ सुरक्षित, समावेशी और समृद्ध हिंद महासागर क्षेत्र को आकार देने में जुटा हुआ है। भारत की ओर से मंत्री ने यह भी साफ किया गया कि हम 'ग्लोबल साउथ' के लिए एक सुदृढ़ और भविष्य के लिए तैयार समुद्री वातावरण चाहते हैं। इस वजह से भारत 'इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन' की ओर से रचनात्मक सहयोग की उम्मीद करता है। उद्घाटन सत्र में मॉरीशस के विदेश और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री धनंजय रामफल और यमन के राज्यमंत्री वलीद मोहम्मद अल कादिमी ने भी विशेष संबोधन दिए। इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन क्या है इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) की स्थापना मार्च, 1997 में की गई। यह एक अंतर-सरकारी संगठन है, जिसका लक्ष्य हिंद महासागर से सटे देशों के बीच आपसी आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग पर काम करना है। आईओआरएस में 23 सदस्य देश और 12 डायलोग पार्टनर शामिल हैं।

भारत से बातचीत को बेचैन हुआ पाकिस्तान, लेकिन रखी एक बड़ी शर्त, बोला- हम कभी पीछे नहीं हटे

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह किसी भी मुद्दे पर भारत के साथ वार्ता से कभी पीछे नहीं हटा, लेकिन बातचीत ''सार्थक'' होनी चाहिए।विदेश कार्यालय के प्रवक्ता ताहिर अंद्राबी ने पत्रकारों के साथ बातचीत में पिछले साल भारत के साथ हुए चार दिवसीय संघर्ष को याद किया और कहा कि किसी भी प्रकार की आक्रामकता की स्थिति में पाकिस्तान पूरी ताकत से जवाब देगा। अंद्राबी ने कहा, ''पाकिस्तान ने भारत के साथ किसी भी मुद्दे पर बातचीत से कभी मुंह नहीं मोड़ा है... हमने बार-बार बातचीत के लिए अपनी तत्परता व्यक्त की है। हालांकि, बातचीत के लिए दोनों पक्षों का सहयोग आवश्यक है, और सार्थक बातचीत के लिए एकतरफा भाषण नहीं बल्कि वास्तविक संवाद होना चाहिए।'' पाकिस्तान सेना ने 'मारका-ए-हक' का एक साल पूरे होने के मौके पर इसे देश के सैन्य इतिहास का ''निर्णायक अध्याय'' बताया। पाकिस्तानी सेना ने पिछले साल भारत के साथ चार दिन तक चले सैन्य संघर्ष को 'मारका-ए-हक' नाम दिया था। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादी हमले में 26 लोगों की मौत होने के बाद भारत ने पिछले साल सात मई को 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया था। इसके तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकवादियों के नौ ठिकानों पर हमले किए गए थे। इन हमलों में कम से कम 100 आतंकवादी मारे गए थे। इस कार्रवाई के बाद दोनों देशों के बीच तनाव बहुत बढ़ गया था और पाकिस्तान ने भारत की कार्रवाई के जवाब में हमले किए थे, हालांकि उनमें से ज्यादातर को भारतीय सेना ने नाकाम कर दिया था। दोनों पक्षों के सैन्य अधिकारियों के बीच 'हॉटलाइन' पर हुई बातचीत के बाद 10 मई को सैन्य संघर्ष को रोकने पर बनी सहमति के साथ संघर्ष विराम हुआ था। पाकिस्तानी सेना ने 'रावलपिंडी, 6/7 मई 2026 की मध्यरात्रि' की तिथि वाले एक बयान में कहा कि सशस्त्र बल बदलते भू-राजनीतिक एवं क्षेत्रीय सुरक्षा माहौल के साथ-साथ शत्रु ताकतों की आक्रामक क्षमता बढ़ाने की कोशिशों से पूरी तरह वाकिफ हैं। बयान में कहा गया, ''सामरिक माहौल लगातार बदल रहा है लेकिन राष्ट्र की रक्षा के लिए पाकिस्तानी सशस्त्र बलों का संकल्प, सतर्कता और प्रतिबद्धता अटूट है।'' इसमें कहा गया, ''पाकिस्तान सशस्त्र बल भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए जरूरी अहम क्षमताओं, उन्नत प्रौद्योगिकियों और पेशेवर उत्कृष्टता में निवेश करना जारी रखे हुए हैं। वे पहले से कहीं अधिक केंद्रित हैं, भविष्य के युद्धक्षेत्र के लिए तैयार हैं और देश पर थोपी गई किसी भी आक्रामकता का निर्णायक जवाब देने के लिए तत्पर हैं।'' सेना ने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ हर शत्रुतापूर्ण मंसूबे का उससे कहीं अधिक ताकत, सटीकता और दृढ़ संकल्प के साथ जवाब दिया जाएगा जो पिछले साल चार दिन के संघर्ष के दौरान शत्रु ने देखा था। इसने कहा कि पाकिस्तान शांति प्रिय देश है और उसके सशस्त्र बल परिपक्व एवं जिम्मेदार रणनीतिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। सेना ने कहा कि पाकिस्तानी सशस्त्र बलों का हर प्रयास, तैयारी और पहल क्षेत्र में शांति बनाए रखने, स्थिरता को बढ़ावा देने और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है। भारत की सैन्य शक्ति पर नजर रख रहा पाकिस्तान भारत के शस्त्र निर्माण और सैन्य आधुनिकीकरण से संबंधित एक प्रश्न के उत्तर में विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अंद्राबी ने कहा कि पाकिस्तान इस पर नजर रख रहा है। उन्होंने कहा, ''इस शस्त्र निर्माण के मद्देनजर, पाकिस्तान यह सुनिश्चित करेगा कि हमारी न्यूनतम विश्वसनीय प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे।'' अंद्राबी ने कहा, ''हम टकराव की बात नहीं करते। हम संवाद और कूटनीति की बात करते हैं।

विराट कोहली चारों खाने चित, प्रिंस यादव ने डक पर मारा गजब बोल्ड, खास लिस्ट में मारी एंट्री

एजेंसी लखनऊ

आईपीएल 2026 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के स्टार खिलाड़ी विराट कोहली शानदार फॉर्म में चल रहे हैं। हालांकि लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ विराट कोहली का बल्ला खामोश रहा। वह खाता भी नहीं खोल पाए और डक पर ही आउट हो गए। उनको लखनऊ के तेज गेंदबाज प्रिंस यादव ने चारों खाने चित कर दिया और गजब बोल्ड मारा। कोहली 2 गेंद खेलकर शून्य पर आउट हो गए।
दरअसल, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की पारी का दूसरा ओवर लखनऊ की तरफ से दिल्ली के प्रिंस यादव डाल रहे थे। ओवर की दूसरी गेंद पर दिग्गज विराट कोहली स्ट्राइक पर थे। प्रिंस ने गुड लेंथ पर गेंद डाली जो पड़ने के बाद तेजी से अंदर की साइड आई। कोहली गेंद को समझने में लेट हो गए और पूरी तरह से बीट हो गए। गेंद जाकर सीधी स्टंप्स पर लगी और कोहली का ऑफ स्टंप उखड़ गया।
विराट कोहली को आईपीएल में डक पर आउट करने वाले गेंदबाज
2008: आशीष नेहरा (एमआई)
2014: जहीर खान (एमआई)
2014: भुवनेश्वर कुमार (एसआरएच)
2014: संदीप शर्मा (पीबीकेएस)
2016: धवल कुलकर्णी (जीएल)
2017: नेथन कुल्टर-नाइल (केकेआर)
2026: प्रिंस यादव (एलएसजी)
आपको बता दें कि आईपीएल के इतिहास में विराट कोहली को सिर्फ 2 गेंदबाज ही प्रिंस यादव को मिलाकर डक पर आउट कर पाए हैं। इससे पहले यह कारनामा धवल कुलकर्णी ने किया था।
आरसीबी ने जीता था टॉस रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान रजत पाटीदार ने टॉस जीतकर लखनऊ के खिलाफ पहले बॉलिंग का फैसला किया था। बारिश के चलते मैच 19-19 ओवर का हो गया था। ऐसे में लखनऊ ने पहले बैटिंग करते हुए 19 ओवर में 3 विकेट पर 219 रन बनाए। लेकिन डीएलएस मैथड के चलते यह टारगेट 213 रन का हो गया था। मिचेल मार्श ने इस मैच में शतक ठोका और 111 रन की शानदार पारी खेली।

अमनप्रीत सिंह गिल की मौत पर टूटा विराट कोहली का दिल, दो लाइन में जताया दुख, युवराज सिंह ने भी किया भावुक पोस्ट

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय अंडर-19 क्रिकेट टीम और घरेलू क्रिकेट में पंजाब के लिए खेल चुके मध्यम गति के तेज गेंदबाज अमनप्रीत सिंह गिल का बुधवार को 36 साल की उम्र में चंडीगढ़ में निधन हो गया। अमनप्रीत सिंह गिल के निधन पर विराट कोहली , युवराज सिंह , और शिखर धवन जैसे क्रिकेटरों ने शोक जताया है। अमनप्रीत के साथ अंडर-19 क्रिकेट खेलने वाले विराट कोहली ने एक्स पर लिखा, 'अमनप्रीत गिल के निधन की खबर सुनकर हैरान और दुखी हूं। उनके परिवार और प्रियजनों को ये दुख सहने की ताकत मिले। ओम शांति।' पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने एक्स पर लिखा, 'अमनप्रीत सिंह गिल के निधन के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ। शुरुआती दिनों में हम अपने ड्रेसिंग रूम में साथ थे। वह एक शांत, मेहनती क्रिकेटर थे जिन्हें खेल से प्यार था। उनके परिवार और प्रियजनों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे। ओम शांति।'
पूर्व ओपनिंग बल्लेबाज शिखर धवन ने एक्स पर लिखा, 'पंजाब के पूर्व क्रिकेटर अमनप्रीत सिंह गिल के इतनी कम उम्र में निधन की खबर सुनकर बहुत दुख हुआ। उनके परिवार, दोस्तों और उन्हें जानने वाले सभी लोगों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। ओम शांति।' पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन (पीसीए) ने उनके निधन पर शोक जताया और उन्हें पंजाब क्रिकेट के एक समर्पित सेवक के रूप में याद किया।

सचिन तेंदुलकर के साथ इंडिया के लिए किया डेब्यू, अब डिप्रेशन से जूझ रहा ये पूर्व क्रिकेटर, रिहैब सेंटर में हुए भर्ती

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट जगत के लिए यह खबर चौंकाने वाली है कि 1989 में सचिन तेंदुलकर के साथ डेब्यू करने वाले सलिल अंकोला इस समय मानसिक स्वास्थ्य की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर 2024 में अपनी मां के निधन के बाद से सलिल काफी परेशान थे और उनकी कमी को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे। जब उन्हें महसूस हुआ कि वह मानसिक रूप से टूट रहे हैं और बार-बार बीमार पड़ रहे हैं, तो उन्होंने एक साहसी फैसला लेते हुए पुणे के पास एक शांतिपूर्ण वातावरण में अपना इलाज कराने का निर्णय लिया। उनकी पत्नी रिया ने बताया कि परिवार उनके इस फैसले से खुश है कि उन्होंने पूरी तरह टूटने के बजाय ब्रेक लेना और खुद को ठीक करना चुना। शिन ट्यूमर ने खत्म किया था अंतरराष्ट्रीय करियर सलिल अंकोला का क्रिकेट करियर उतार-चढ़ाव भरा रहा है। उन्होंने 1989 से 1997 के बीच भारत के लिए एक टेस्ट और 20 वनडे मैच खेले, जिसमें उन्होंने 15 विकेट चटकाए। हालांकि, उनके अंतरराष्ट्रीय करियर का अंत बहुत ही दुखद तरीके से हुआ जब उनके बाएं पैर की पिंडली में ट्यूमर का पता चला। इस गंभीर बीमारी के कारण उन्हें समय से पहले क्रिकेट को अलविदा कहना पड़ा। क्रिकेट छोड़ने के बाद सलिल ने अभिनय की दुनिया में भी हाथ आजमाया और कई लोकप्रिय टीवी सीरियल्स और फिल्मों में काम किया, लेकिन उनका पहला प्यार हमेशा क्रिकेट ही रहा। यह पहली बार नहीं है जब सलिल अंकोला ने अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से लड़ने के लिए मदद ली हो। रिपोर्ट्स के मुताबिक, करीब दो दशक पहले वह शराब की लत से भी जूझ रहे थे और उस वक्त भी उन्होंने रिहैब के जरिए खुद को संभाला था। घरेलू स्तर पर सलिल एक दिग्गज गेंदबाज थे, जिन्होंने मुंबई और महाराष्ट्र के लिए 54 प्रथम श्रेणी मैचों में 181 विकेट लिए थे। हाल के वर्षों में उन्होंने बीसीसीआई की सीनियर चयन समिति के सदस्य के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके दोस्तों और क्रिकेट बिरादरी ने उनके इस ब्रेक लेने के फैसले का पूरा समर्थन किया है। रिया अंकोला ने प्रशंसकों को आश्वस्त किया है कि सलिल अब ठीक हो रहे हैं। उन्होंने कहा, 'वह नियमित रूप से वर्कआउट कर रहे हैं और बहुत जल्द अपने काम पर वापस लौटेंगे। वह हमेशा से एक फाइटर रहे हैं और पहले से कहीं ज्यादा मजबूत होकर बाहर आएंगे।' परिवार और दोस्तों का साथ मिलने से सलिल की मानसिक स्थिति में सुधार हो रहा है। यह घटना एक बार फिर याद दिलाती है कि मानसिक स्वास्थ्य कितना महत्वपूर्ण है और मदद मांगना कमजोरी नहीं, बल्कि मजबूती की निशानी है। पूरा क्रिकेट जगत सलिल अंकोला के जल्द स्वस्थ होने की कामना कर रहा है।

आईपीएल के बीच वनडे सीरीज करा रहा था पाकिस्तान, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने दिखा दिया आईना, प्लेऑफ में रहेंगे खिलाड़ी

एजेंसी नई दिल्ली

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने गुरुवार को पुष्टि की कि कप्तान पैट कमिंस सहित उसके खिलाड़ियों को आईपीएल 2026 में अपनी प्रतिबद्धता पूरी करने की स्वीकृति मिलेगी और उन्हें पाकिस्तान के खिलाफ 30 मई से शुरू हो रही तीन मैच की वनडे सीरीज के लिए छूट दी जाएगी। आईपीएल का लीग चरण 24 मई को संपन्न होगा जबकि टूर्नामेंट का फाइनल 31 मई को खेला जाएगा। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों के 23 मई को इस्लामाबाद पहुंचने का कार्यक्रम है जो आईपीएल का अंतिम चरण होगा। सनराइजर्स हैदराबाद के एक सूत्र ने पीटीआई से कहा, 'हां, हमें सूचना मिली है कि हमारी टीम में शामिल ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी आईपीएल के लिए रुकेंगे।' कप्तान कमिंस के अलावा ऑस्ट्रेलिया के ओपनिंग बल्लेबाज ट्रेविस हेड भी सनराइजर्स की टीम का हिस्सा हैं। हैदराबाद की टीम अभी 14 अंक के साथ तालिका में शीर्ष पर चल रही है और प्ले ऑफ में जगह बनाने की प्रबल दावेदार है। कई ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी खेल रहे आईपीएल के बीच के अंतराल को 10 साल से घटाकर 5 साल करने का प्रस्ताव है। हालांकि, इस विचार पर काफी फोकस किया गया। लेकिन, कर्मचारियों के प्रतिनिधियों ने यह साफ किया कि आयोग के पास सीधे तौर पर ऐसा बदलाव लागू करने का अधिकार नहीं है। इसके बजाय, उन्होंने अपील की कि इस सिफारिश को औपचारिक रूप से सरकार को भेजा जाए। रामर्श प्रक्रिया पूरे देश में जारी रहेगी। इसके तहत हैदराबाद (18-19 मई), श्रीनगर (1-4 जून) और लद्दाख (8 जून) में आगामी बैठकें तय हैं। यह दिखाता है कि अंतिम सिफारिशें तैयार करने से पहले व्यापक स्तर पर लोगों तक पहुंचने का प्रयास किया जा रहा है। कर्मचारियों के प्रतिनिधियों का तर्क है कि मौजूदा दस साल का वेतन संशोधन साइकिल अब आर्थिक वास्तविकताओं को सही ढंग से नहीं दिखाता है। एनसी-जेसीएम के सचिव (कर्मचारी पक्ष) शिव गोपाल मिश्रा ने इंडिया टुडे को बताया कि महंगाई और अलग-अलग क्षेत्रों के रुझानों के साथ तालमेल बैठाने के लिए वेतन संशोधन कई बार होना चाहिए। मिश्रा ने कहा, 'सरकारी कर्मचारियों के वेतन में हर पांच साल में संशोधन की मांग पूरी की जानी चाहिए। इसके कई कारण हैं।' शिव गोपाल मिश्रा के मुताबिक, कई सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम (पीएसयू) और बैंकिंग संस्थान पहले से ही पांच साल के पे रिवीजन साइकिल का पालन करते हैं। उन्होंने आगे कहा, 'सरकार के सभी सार्वजनिक उपक्रमों में पांच साल के अंतराल पर वेतन संशोधन की व्यवस्था है। हमारे सभी बैंकिंग संगठनों में सिर्फ पांच साल में वेतन में बदलाव होता है।' साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि निजी क्षेत्र में वेतन अक्सर इससे भी तेजी से एडजस्ट होते हैं। उनके अनुसार, वेतन संशोधन में देरी से वास्तविक आय में कमी आती है। उन्होंने कहा, 'अगर हम इसे दस साल के लिए लेते हैं तो दस साल के इंतजार में हमारा पूरा प्राइस इंडेक्स बहुत ज्यादा बढ़ जाएगा। और महंगाई की वजह से हमारी सैलरी जो दस साल पहले तय हुई थी, वह अपने असली रूप में रहने के बजाय कम हो जाती है।'

आईपीएल में खेल रहे ऑस्ट्रेलिया के अन्य खिलाड़ी जोश हेजलवुड, टिम डेविड (दोनों रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु), मिचेल मार्श, जोश इंग्लिस (दोनों लखनऊ सुपर जाइंट्स), जेवियर बार्टलेट, मार्कस स्टोइनिस, कूपर कोनोली (तीनों पंजाब किंग्स), मैथ्यू शॉर्ट (चेन्नई सुपरकिंग्स), मिचेल स्टार्क (दिल्ली कैपिटल्स) और कैमरन ग्रीन (कोलकाता नाइट राइडर्स) हैं। इनमें से अगर दिल्ली कैपिटल्स और कोलकाता नाइट राइडर्स नॉकआउट चरण में नहीं पहुंच पाते हैं तो ग्रीन और स्टार्क लीग चरण के बाद आईपीएल छोड़कर जा सकते हैं। दिल्ली कैपिटल्स अभी 10 मैच में आठ अंक के साथ तालिका में 7वें स्थान पर है जबकि नाइट राइडर्स 9 मैच में 7 अंक के साथ आठवें पायदान पर हैं। दूसरी ओर सुपर जाइंट्स की प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीदें लगभग खत्म हो चुकी हैं क्योंकि वे नौ मैच में सिर्फ चार अंकों के साथ 10वें स्थान पर हैं। इसलिए मार्श और इंग्लिस भी पहले वनडे से पूर्व पाकिस्तान में ऑस्ट्रेलियाई टीम में शामिल हो सकते हैं। हालांकि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने अभी तक इस दौरे के लिए टीम की घोषणा नहीं की है। हेजलवुड, डेविड, कोनोली जैसे खिलाड़ियों को हालांकि यहीं रुकना पड़ सकता है क्योंकि रॉयल चैलेंजर्स बेंगलरु और पंजाब किंग्स के भी प्लेऑफ में पहुंचने की पूरी संभावना है। अब उम्मीद है कि वे जून के पहले हफ्ते में बांग्लादेश में राष्ट्रीय टीम से जुड़ेंगे। ऑस्ट्रेलिया नौ जून से बांग्लादेश के खिलाफ तीन वनडे अंतरराष्ट्रीय और इतने ही टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलेगा।

व्यापार

10 के बजाय 5 साल, सैलरी रिवीजन के नए फॉर्मूले पर मंथन, माना गया प्रपोजल तो ऐसे पड़ेगा फर्क

एजेंसी नई दिल्ली

8वें वेतन आयोग ने आधिकारिक तौर पर कर्मचारी संघों और कर्मचारियों के प्रतिनिधियों के साथ परामर्श प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह उन अहम चर्चाओं की शुरुआत है जो आने वाले सालों में केंद्र सरकार के कर्मचारियों के वेतन, पेंशन और भत्तों को तय कर सकती हैं। बैठकों का पहला दौर 28 अप्रैल से 30 अप्रैल के बीच दिल्ली में हुआ। इसमें सैलरी स्ट्रक्चर से लेकर पेंशन रिफॉर्म्स तक कई मुद्दों पर चर्चा की गई। इनमें से एक रिफॉर्म ने काफी ध्यान खींचा। इसमें 10 साल के बजाय हर 5 साल में वेतन संशोधन की मांग की गई है। दिल्ली में हुई चर्चाओं के दौरान आयोग ने नेशनल काउंसिल-ज्वाइंट कंसल्टेटिव मशीनरी (एनसी-जेसीएम) के साथ कई कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों से बातचीत की। बातचीत का मुख्य फोकस सेवा से जुड़े अहम मुद्दों पर था। इनमें फिटमेंट फैक्टर, प्रस्तावित वेतन संशोधन, पेंशन प्रणाली में बदलाव, भत्ते और पुरानी पेंशन योजना का भविष्य शामिल था। इन चर्चाओं की लगातार कवरेज के दौरान इंडिया टुडे की एक रिपोर्ट के अनुसार, सबसे जोरदार तरीके से सुझाए गए प्रस्तावों में से एक स्ट्रक्चर रिफॉर्म था। इसके तहत दो वेतन आयोगों

एचडीएफसी बैंक के लोन की ब्याज दरों में बदलाव, अब इतना हो गया है रेट

एजेंसी नई दिल्ली

एचडीएफसी बैंक ने लोन की ब्याज दरों में बदलाव किया है। कुछ खास समय-सीमाओं के लिए बैंक ने मार्जिनल कॉस्ट ऑफ फंड्स-बेस्ड लेंडिंग रेट्स (एमसीएलआर) में 5 बेसिस पॉइंट्स (bps) यानी 0.05 फीसदी तक की कटौती की है। यह उन कर्जदारों के लिए अच्छी खबर है जिनके लोन इस व्यवस्था से जुड़े हुए हैं। दूसरी ओर, बैंक ने एक खास समय-सीमा के लिए एमसीएलआर में 5 bps की बढ़ोतरी भी की है। बैंक की ऑफिशियल वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, नई दरें 7 मई, 2026 से लागू हो गई हैं। इस बदलाव के बाद एचडीएफसी बैंक की एमसीएलआर दरें अब लोन की समय-सीमा के आधार पर 8.05% से 8.60% के बीच हैं। इससे पहले, एचडीएफसी बैंक की एमसीएलआर दरें 8.10% से 8.55% के दायरे में थीं। बैंक ने 7 अप्रैल, 2026 को किए गए पिछले रेट एडजस्टमेंट की तुलना में कुछ खास समय-सीमाओं के लिए अपने एमसीएलआर में बदलाव किया है। ओवरनाइट, एक महीने, तीन महीने और छह महीने की एमसीएलआर दरों में 5 बेसिस पॉइंट्स की गिरावट आई है। अब ओवरनाइट और एक महीने की एमसीएलआर दरें 8.10% से घटकर 8.05% हो गई हैं। तीन महीने की दर 8.20% से घटकर 8.15% रह गई है। छह महीने की एमसीएलआर दर 8.35% से घटकर 8.30% हो गई है। दूसरी ओर, एक साल और दो साल की एमसीएलआर दरें 8.35% और 8.45% पर जस की तस बनी हुई हैं। इसके उलट, तीन साल की एमसीएलआर दर 5 बेसिस पॉइंट्स बढ़कर 8.55% से 8.60% हो गई है।

एचडीएफसी बैंक दरें (7 मई, 2026 से लागू)

अवधि	एमसीएलआर
ओवरनाइट	8.05%
1 महीना	8.05%
3 महीने	8.15%
6 महीने	8.30%
1 साल	8.35%
2 साल	8.45%
3 साल	8.60%

एचडीएफसी बैंक दरें; नई बनाम पुरानी

अवधि	MCLR (7 मई, 2026)	MCLR (7 अप्रैल, 2026)	बदलाव
ओवरनाइट	8.05%	8.10%	0.05%, 1 महीना
1 महीना	8.05%	8.10%	0.05, 3 महीने
3 महीने	8.15%	8.20%	0.05%, 6 महीने
6 महीने	8.30%	8.35%	0.05%, 1 साल
1 साल	8.35%	8.35%	कोई बदलाव नहीं,
2 साल	8.45%	8.45%	कोई बदलाव नहीं, 3 साल
3 साल	8.60%	8.55%	0.05% की बढ़ोतरी

MCLR क्या है MCLR वह न्यूनतम ब्याज दर है जो किसी वित्तीय संस्थान को किसी खास लोन के लिए लेनी होती है। यह किसी लोन के लिए ब्याज दर की निचली सीमा तय करती है। उधार लेने वालों के लिए यह दर सीमा तब तक तय रहती है, जब तक आरबीआई की ओर से अन्यथा न कहा जाए। आरबीआई ने 2016 में एमसीएलआर की शुरुआत की थी।

उन 12 मिनट में अचानक ऐसा क्या हुआ कि सेंसेक्स करीब 500 अंक उछल गया, आगे का दे दिया संकेत

एजेंसी नई दिल्ली

बीएसई सेंसेक्स में ट्रेडिंग के दौरान गुरुवार को अचानक तेजी देखी गई। 30 शेयरों वाला बेंचमार्क इंडेक्स 12 मिनट के अंदर ही लगभग 500 अंक ऊपर चढ़ गया। इसकी वजह वे रिपोर्ट थीं जिनमें कहा गया कि अमेरिका और ईरान के बीच एक समझौता हो गया है। इसके तहत होर्मुज स्ट्रेट में अमेरिकी नौसैनिक नाकेबंदी में ढील दी जाएगी। बदले में इस अहम जलमार्ग को धीरे-धीरे फिर से खोला जाएगा। इस पूरे घटनाक्रम से एक संकेत यह भी मिला कि बाजार को होर्मुज से आवाजाही सामान्य होने का बेसब्री से इंतजार है। ऐसा होते ही बड़ी तेजी देखने को मिल सकती है। इसके बाद ब्रेंट क्रूड की कीमत लुढ़ककर 99 डॉलर प्रति बैरल के करीब पहुंच गई। वहीं, वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट 93 डॉलर के आसपास था। इस मामले से परिचित एक व्यक्ति ने ब्लूमबर्ग को बताया कि अमेरिका ने एक पन्ने का एमओयू ऑफर किया है। इससे मुमकिन है कि होर्मुज स्ट्रेट को धीरे-धीरे फिर से खोलने का रास्ता साफ होगा। उम्मीद है कि ईरान आने वाले दिनों में इस पर अपनी प्रतिक्रिया देगा। इस बीच, सूत्रों ने अल अरबिया को बताया कि दोनों पक्षों के बीच एक सहमति बन गई है। संघर्ष की शुरुआत में ईरान ने इस जलमार्ग (होर्मुज स्ट्रेट) को बंद कर दिया था। इससे ग्लोबल एनर्जी सप्लाई में रुकावट पैदा हो गई थी। सूत्रों ने अल अरबिया को बताया, 'होर्मुज स्ट्रेट को धीरे-धीरे फिर से खोलने के बदले में नाकेबंदी में ढील देने को लेकर समझौते हो गए हैं। आने वाले कुछ घंटों में इस जलमार्ग में फंसे जहाजों को रिलीज किया जाएगा।' अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर युद्ध को खत्म करने का दबाव बढ़ रहा है। अमेरिका में रिटेल एनर्जी की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं। इससे अमेरिकियों की जेब पर पड़ने वाले बोझ को लेकर उनकी टेंशन और भी बढ़ गई हैं। इसके अलावा, ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की 14-15 मई को बीजिंग में मुलाकात होने वाली है। इसी हफ्ते चीन के टॉप राजनयिक ने अपने ईरानी समकक्ष के साथ हुई एक बैठक में होर्मुज स्ट्रेट को जल्द से जल्द फिर से खोलने की अपील की थी।

महादेव शिव को मिला वो श्राप, जिसके कारण उनके ही पुत्र श्री गणेश को भुगतना पड़ा कष्ट

आपने भगवान गणेश के सिर कटने की कथा के बारे में तो सुना ही होगा, जिसे स्वयं महादेव ने काटा था। माना जाता है कि भगवान गणेश के मस्तक छिन्न होने के पीछे केवल शनिदेव की दृष्टि थी। लेकिन आपको बता दें कि इसके पीछे महर्षि कश्यप का एक प्राचीन श्राप भी था, जो उन्होंने भगवान शिव को दिया था। गणेश पुराण में दी हुई कथा के अनुसार, सूत जी ने शौनक जी के संदेह का निवारण किया है। शौनक जी का प्रश्न था कि भगवान शिव के पुत्र और स्वयं श्रीकृष्ण के अंश होने के बावजूद गणेश जी का मस्तक शनि की दृष्टि से कैसे छिन्न हो गया? आइए 'धर्म गाथा' श्रृंखला में जानते हैं कि महर्षि कश्यप ने शिव जी को क्या श्राप दिया जिसके कारण गणेश जी को अपना मस्तक गंवाना पड़ा था जब श्री सूत जी ने शौनक जी से शनि को मिली क्रूर दृष्टि और गणेश जी के सिर का शिव जी के काटने की कथा सुनी, तो उनके मन में एक आशंका उत्पन्न हुई। गणेश पुराण के तृतीय खंड के नवम अध्याय में श्री सूत जी ने शौनक जी को इस कथा के बारे में बताया था, जो स्वयं श्री हरि विष्णु ने नारद जी को सुनाई थी। शौनक जी ने श्री सूत जी से पूछा कि हे महामुने मुझे एक बात की आशंका है जिसका निवारण आप कर दें। सर्वशक्तिमान गोलोकवासी भगवान् श्रीकृष्ण के अंश भूत एवं सर्व भूतभावन भगवान शंकर द्वारा पार्वती जी के गर्भ से उत्पन्न शिशु को इस प्रकार के विघ्न की प्राप्ति क्यों हुई थी? भला शनि को इस प्रकार की शक्ति कहां से प्राप्त हो गई, जिसके कारण देवाधिदेव भगवान गणेश का ही मस्तक छिन्न हो गया था? कृपया इसका समाधान करें। शौनक जी का प्रश्न सुनकर सूतजी आनंद विभोर हो गए और भगवान का स्मरण करने के बाद बोले कि शौनक जी तुम धन्य हो जो ऐसे लोकोपकारी प्रश्नों को पूछते हो। मैं भी अपने को धन्य ही मानता हूं जो ऐसे हरिभक्त श्रोता की शंकाओं का हल करने का अवसर मिल रहा है।

स्वयं श्री हरि विष्णु ने नारद जी को सुनाई थी ये कथा इस प्रश्न का उत्तर में आपको अवश्य दूंगा, क्योंकि यहीं प्रश्न देवर्षि नारद ने श्री नारायण से किया था और नारायण ने जो उत्तर दिया था, वही तुम्हें बताऊंगा।

देवर्षि नारदजी ने श्री हरी विष्णु से पूछा-

"नारायण महाभाग वेदवेदाङ्गपारग ।
पृच्छामि त्वामहं किञ्चिदतिसन्देहमीश्वर ॥
सुतस्य त्रिदशेशस्य शङ्करस्य महात्मनः ।
विघ्नविघ्नस्य यद्विघ्नमीश्वरस्य कथं प्रभो ॥"

अर्थ- हे नारायण, महाभाग, हे वेद वेदांगों के पारगामी प्रभो, हे ईश्वर.. मुझे कुछ संदेह हुआ है, इसलिए आपसे पूछता हूं। हे नाथ भगवान शंकर तो महान हैं, उनके आत्मभूत पुत्र जो स्वयं भी सभी विघ्नों के विघ्न दूर करने में समर्थ हैं, उन परमात्मा को विघ्न की प्राप्ति किस कारण से हुई थी? हे भगवान.. गोलकनाथ तो पर से भी परे, परिपूर्ण परमात्मा हैं तथा पार्वती के यह पुत्र उन्हीं के अंश रूप हैं तो कैसे आश्चर्य का विषय है कि उन परिपूर्ण परमेश्वर का मस्तक भी शनि की दृष्टि मात्र से छिन्न हो गया? महर्षि कश्यप ने दिया था शिवजी को श्राप नारद जी के प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री हरि विष्णु ने कहा कि ब्रह्मन्। आपने बहुत सुन्दर प्रश्न किया है। आप सावधान होकर अपने प्रश्न का उत्तर सुनो।

यह बहुत प्राचीन काल की बात है कि एक बार भगवान शंकर ने सूर्यदेव को अपने त्रिशूल से मार गिराया, इस कारण समस्त संसार में अंधकार छा गया था। सूर्य के पिता महर्षि कश्यप उनके चेतनाहीन शरीर को गोद में लेकर विलाप करने लगे। उस समय त्रिभुवन में अंधकार के कारण हाहाकार होने लगा, जिससे सब देवता भी अत्यन्त त्रस्त हो गए । महर्षि कश्यप ब्रह्माजी के पौत्र, परम तपस्वी एवं तेज से जाज्वल्यमान थे। उन्होंने अपने पुत्र के संहारकर्ता शिवजी को श्राप दे डाला—

"मत्पुत्रस्य यथा वक्षश्छिन्नं शूलेन तेऽद्य च ।
त्वत्पुत्रस्य शिरश्छिन्नमेवभूतम्भविष्यति ॥"

उन्होंने कहा कि शंकर.. तुमने आज जिस प्रकार से मेरे पुत्र का छाती चीर दी है, उसी प्रकार तुम्हारे पुत्र का भी किसी दिन मस्तक छिन्न हो जायेगा।

Also Readजब शिव जी से कश्यप जी से श्राप को सुना,

तो उन्हें क्रोध आ गया और वे कश्यप को श्राप देने के लिए उद्यत हुए। तभी ब्रह्मा जी ने बीच में आकर उन्हें शांत करने की कोशिश करते हुए कहा कि हे देवाधिदेव.. आप तो तीनों लोकों के स्वामी और संहारकर्ता हैं। यह समस्त जीव आपकी ही ओर करुण-दृष्टि से देख रहे हैं। इसलिए प्रभु आप क्रोध को त्याग दीजिए और कश्यप से प्रतिशोध मत लीजिए। आपके ऐसा करने से विवाद और भी बढ़ जायेगा। हे दयामय अब शीघ्र ही प्रसन्न होकर अंधकार दूर कीजिए, जिससे कि समस्त प्राणी भय मुक्त हो सकें। शिव जी से प्रसन्न होकर दिया सूर्य को दिया पुनर्जीवन का वरदान जब शिव जी से ब्रह्मा जी की स्तुति सुनी, तो वह अति प्रसन्न हो गए और उन्होंने ब्रह्मा जी से कहा कि मैं आपसे प्रसन्न हूं। इसलिए आप जो चाहे वो वरदान मुझसे मांग सकते हैं।

ऐसे में ब्रह्मा जी ने कहा कि मुझे कोई दूसरा वर नहीं चाहिए। बस आपके यहीं यातना है कि आप सूर्य को पुनर्जीवन दें, जिससे संसार में छाया हुआ घोरतम अंधकार दूर हो सके। अगर ऐसा न हुआ, तो त्रिलोकी ही नष्ट हो जायेगी। क्योंकि सूर्य में मुझ ब्रह्मा, विष्णु और आपका भी अंश विद्यमान है। इस प्रकार सूर्य त्रिगुणात्मक हैं और शिव भी त्रिगुणात्मक हैं। जब उन्हें गुणों की प्राप्ति नहीं होगी, तब उनमें प्राण भी कहां रहेंगे? ऐसे में शिव जी से पुनः सूर्य को पुनर्जीवन दिया। किंतु कश्यप का वह श्राप अमिट रहा, जिसके कारण अंततः गणेश जी को अपना मस्तक गंवाना पड़ा।

पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर क्यों है दुनिया में खास, जानिए इतिहास, दर्शन का महत्व और कैसे पहुंचे

दिव्य धाम की सीराज में आज हम बात करने जा रहे हैं राजस्थान प्रदेश के अजमेर जिले में स्थित पुष्कर मंदिर के बारे में, पुष्कर में स्थित ब्रह्मा मंदिर देश ही नहीं बल्कि दुनिया के सबसे प्रसिद्ध और दुर्लभ ब्रह्मा मंदिरों में गिना जाता है। क्योंकि हिंदू धर्म में भगवान ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता माना जाता है, लेकिन उनके मंदिर बहुत कम देखने को मिलते हैं। ऐसे में पुष्कर का यह प्राचीन मंदिर श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए विशेष आस्था का केंद्र बना हुआ है। हर साल यहां लाखों भक्त दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए पहुंचते हैं। खासतौर पर कार्तिक पूर्णिमा और पुष्कर मेले के दौरान इस मंदिर की भव्यता देखने लायक होती है। भारत में ब्रह्मा को समर्पित एकमात्र मंदिर होने के कारण, यह हर साल लाखों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है। लाल शिखर और हंस की छवि इस मंदिर के पहचान चिह्न हैं। मंदिर के गर्भगृह में भगवान ब्रह्मा की चतुर्मुखी मूर्ति है।

ब्रह्मा मंदिर का इतिहास मान्यता के अनुसार, भगवान ब्रह्मा ने इसी स्थान पर यज्ञ किया था। कहा जाता है कि यज्ञ के दौरान कमल का फूल पृथ्वी पर गिरा और उस स्थान से जल की धारा निकली, जिसे आज पुष्कर सरोवर के नाम से जाना जाता है। मुख्य मंदिर को 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था। मंदिर की वास्तुकला राजस्थानी शैली में बनी हुई है, जिसमें संगमरमर और पत्थरों की सुंदर नक्काशी देखने को मिलती है। मंदिर में भगवान ब्रह्मा की चार मुख वाली प्रतिमा स्थापित है, जो चारों वेदों का प्रतीक मानी जाती है।

धार्मिक महत्व ब्रह्मा मंदिर हिंदू धर्म में अत्यंत पवित्र माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यहां दर्शन करने और पुष्कर सरोवर में स्नान करने से व्यक्ति को पुण्य की प्राप्ति होती है और जीवन के पापों से मुक्ति मिलती है। कार्तिक महीने में यहां स्नान और पूजा का विशेष महत्व बताया गया है। माना जाता है कि इस मंदिर में पूजा करने से सुख-समृद्धि और मानसिक शांति प्राप्त होती है।

कैसे पहुंचे पुष्कर मंदिर पुष्कर मंदिर से सबसे नजदीकी एयरपोर्ट किशनगढ़ एयरपोर्ट और जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। वहीं अजमेर जंक्शन सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन है, जो देश के कई बड़े शहरों से जुड़ा हुआ है। साथ ही आपको बता दें कि अजमेर से पुष्कर की दूरी करीब 15 किलोमीटर है। यहां बस, टैक्सी और निजी वाहन से आसानी से पहुंचा जा सकता है।

हिंदू धर्म के 16 संस्कार कौन-कौन से हैं ? जीवन से पहले और मृत्यु के बाद तक निभाते हैं यूं साथ

हिंदू धर्म के सोलह संस्कार में पूरे जीवन का रहस्य और ताना-बाना बुना हुआ है। मनुस्मृति समेत कई ग्रंथो में मानव जीवन के इन संस्कारों का जिक्र मिलता है। शास्त्रों में कहा गया है कि मनुष्य जीवन के मूल 4 उद्देश्य हैं, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष और 16 संस्कार मानवजीवन के इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने में सहयोग प्रदान करते हैं। और इसकी तैयारी जीव के जन्म से पूर्व से ही शुरू हो जाती है और देह त्याग होने पर इनका समापन होता है यानी जीवन से पहले और मृत्यु के बाद तक का साथ रहता है। क्योंकि जन्म से पूर्व ही 3 संस्कार हो जाते हैं और 12 संस्कार फिर जन्म के बाद मृत्यु पूर्व तक चलते हैं और फिर 1 मात्र संस्कार मृत्यु के बाद होता है जिसे अंतिम संस्कार भी कहते हैं। तो आइए विस्तार पूर्वक जानते हैं हिंदू धर्म के 16 संस्कार।

गर्भाधान संस्कार हिंदू धर्म का सबसे पहला संस्कार गर्भाधान है। यह दंपत्ति की शारीरिक और मानसिक शुद्धि व स्वास्थ्य के लिए किया जाता है। इसका उद्देश्य स्वस्थ और श्रेष्ठ शिशु का जन्म होता है।

पुंसवन संस्कार गर्भधारण के बाद यह दूसरा संस्कार होता है जिसे तीसरे महीने में किया जाता है। इसका उद्देश्य शिशु का स्वस्थ शारीरिक और मानसिक विकास होता है। कहते हैं कि शुरुआती तीन महीनों में गर्भवती को सबसे अधिक सचेत रहना आवश्यक होता है। इसके बाद, वे समाज व परिवार में गर्भधारण की सूचना दे सकती हैं। इस संस्कार में गर्भवती का स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। साथ ही, तीसरे माह में दंपत्ति और परिवार द्वारा देव पूजन भी किया जाता है।

सीमन्तोन्नयन संस्कार यह हिंदू धर्म का तीसरा संस्कार है, जो गर्भधारण के चौथे, छठे या 8वें माह में किया जाता है। इस संस्कार में गर्भवती को पवित्र वस्त्र पहनाए जाते हैं और शिशु व मां की सुरक्षा के लिए देव पूजन किया जाता है। साथ ही, पति अपनी पत्नी के बालों को संवारता है, जिसे स्नेह, सहयोग और प्रेम का प्रतीक माना जाता है। मां को परिवार और माताएं आशीर्वाद देती हैं।

जातकर्म संस्कार शिशु के जन्म से छठे दिन जातकर्म संस्कार किया जाता है। इस दिन शिशु के जन्म के सही समय और नक्षत्रानुसार पत्रिका बनाई जाती है और माता-पिता द्वारा शिशु का गुप्त नामकरण होता है। जन्म के बाद का यह पहला संस्कार शिशु के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है। इस पूजा, मंत्र जप आदि किया जाता है।

नामकरण संस्कार हिंदू धर्म का पांचवां संस्कार है और शिशु के जन्म के बाद का दूसरा संस्कार, जो दसवें दिन किया जाता है। इस संस्कार को जन्म से सवा महीने के भीतर किया जाता है। नामकरण संस्कार में शिशु की कुंडली और ग्रहों के अनुसार उसका नामकरण किया जाता है। इसके बाद, समाज में बालक का नाम बताया जाता है।

निष्क्रमण संस्कार शिशु के जन्म के बाद उसे बारहवें दिन से चौथे महीने के बीच में सूर्य के दर्शन कराए जाते हैं। सूर्य व चंद्रमा के दर्शन के बाद घर की वापसी मामा की गोद में होती है। ये संस्कार शिशु के अच्छे स्वास्थ्य और मानसिक विकास के लिए किया जाता है।

अन्नप्राशन संस्कार यह हिंदू धर्म का सातवां संस्कार है जिसमें शिशु को छठे से सातवें महीने में माता द्वारा शुद्धता से बना हुआ चावल या खीर खिलाई जाती है। इसके बाद, कामना की जाती है कि शिशु को सुपाच्य यानी आसानी से खाने व पचने वाला और सात्विक भाव से बना अन्न मिले।

मुंडन या चूड़ाकर्म संस्कार बालक के जन्म से तीसरे वर्ष तक में मुंडन कराने का विधान होता है। यानी इस आठवें संस्कार में बालक के जन्म से प्राप्त हुए बालों को हटाया जाता है। ऐसा नए और स्वस्थ बालों के विकास के लिए किया जाता है। शास्त्रों में भी इसका महत्व बताया गया है।

विद्यारंभ संस्कार तीन वर्ष का होने के बाद बालक के विद्या का आरंभ कराया जाता है। इस नौवें संस्कार में बालक नए अक्षर सीखने और ज्ञान प्राप्त करने की तरफ अपना पहला कदम रखता है। इसका उद्देश्य बालक को अच्छी शिक्षा और गुण देना है।

कर्णवेध संस्कार हिंदू धर्म के दसवें संस्कार में बालक और बालिका का कर्ण छेदन यानी कान छिदवाए जाते हैं। ऐसा करने से कुछ ऐसी नाड़ियां होती हैं जिन पर इसका प्रभाव पड़ता है और यह बालक के विकास और तीव्र बुद्धि में सहायक होता है। साथ ही, इसका अनुकूल प्रभाव ग्रहों पर भी पड़ता है।

यज्ञोपवीत संस्कार यह हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण संस्कारों में से एक है, जो कि ग्यारहवां संस्कार है। इसमें बालक को जनेऊ धारण कराया जाता है। साथ ही, शिशु अपने गुरु से विद्या प्राप्त करता है। यज्ञोपवीत संस्कार का उद्देश्य आध्यात्मिक और नैतिक अनुशासन के मार्ग पर चलना है।

उपनयन या वेदारंभ संस्कार बालक के आठ वर्ष के होने के बाद बारहवां संस्कार वेदारंभ किया जाता है। इसमें गुरुओं द्वारा वेदों की शिक्षा दी जाती है। आज के समय में घर में भी शास्त्रज्ञान व वेदों की शिक्षा दी जाने लगी है। वहीं, पहले के समय में यह संस्कार गुरुकुल में होता था। इसका उद्देश्य को बालक को अपने कर्तव्यों और अच्छे गुणों के बारे में शिक्षा देना होता है।

केशान्त संस्कार युवावस्था में शिक्षा पूरी होने के बाद यह तेरहवां संस्कार किया जाता है। एक बार बाल्यावस्था में मुंडन होता है और फिर एक बार शिक्षा पूरी होने के बाद भी मुंडन कराया जाता है। साथ ही, दाढ़ी-मूंछ मुंडवाई जाती है। यह शिक्षा के बाद आगे बढ़ने का प्रतीक होता है जिसमें मनुष्य के जीवन के अगले हिस्से में आगे बढ़ता है।

समावर्तन संस्कार यह हिंदू धर्म का चौदहवां संस्कार है, जिसमें विद्या और अध्ययन पूर्ण होने पर माता-पिता और परिवार आनंदित रहते हैं। साथ ही, मनुष्य गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है। इसका उद्देश्य बचपन से प्राप्त हुए ज्ञान को व्यवहार में लाना और एक अच्छा व्यक्ति बनना होता है।

विवाह संस्कार व्यक्ति इस संस्कार में अपने गृहस्थ जीवन की शुरुआत करता है, जो हिंदू धर्म का पंद्रहवां संस्कार है। विधि पूर्वक विवाह के बाद एक नया जीवन और रिश्ता शुरू होता है। मान्यता है की शास्त्र विधि के साथ संस्कार करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है।

अन्त्येष्टि संस्कार यह हिंदू धर्म का अंतिम संस्कार है। जिसमें मनुष्य की मृत्यु के बाद दाह संस्कार और श्राद्ध कर्म किया जाता है। इसका उद्देश्य जीव का शरीर पंचतत्व में विलीन हो जाना है।

आर्थिक राशिफलः राहु-केतु के प्रभाव और बुध के अस्त होने से कैसा रहेगा आर्थिक और व्यावसायिक जीवन

मेष राशि आर्थिक दृष्टि से आज का दिन काफी स्थिर रहने वाला है। वृषभ राशि में विराजमान शुक्रदेव आपके आय में निरंतरता और वृद्धि का समर्थन कर रहे हैं। आप बचत और लंबी अवधि के निवेश पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। फिजूलखर्ची से बचना ही आज आपके हित में होगा। निवेश की योजना बना रहे हैं तो, सभी पहलुओं का मूल्यांकन जरूर करें।

वृषभ राशि आज आपके जीवन में वित्तीय स्थिरता के योग बन रहे हैं। मिथुन राशि के दूसरे भाव में बैठे बृहस्पतिदेव आय में वृद्धि और बेहतर आर्थिक निर्णय में आपकी मदद करेंगे। भविष्य के लिए बचत या निवेश पर विचार करना आज सार्थक रहेगा। बारहवें भाव की सक्रीयता के कारण अचानक होने वाले खर्चों पर नियंत्रण रखें।

मिथुन राशि आज आपको निवेश से पूरी तरह बचना चाहिए। आठवें भाव का प्रभाव आर्थिक उतार-चढ़ाव की ओर संकेत कर रहा है।

वर्तामान संसाधानों का प्रबंधन समझदारी से करें। कुछ गुप्त या अचानक आने वाले वित्तीय मामलें सामने आ सकते हैं, इसलिए सतर्क रहें। बृहस्पतिदेव लंबी अवधि की सफलता का समर्थन कर रहे हैं, लेकिन अल्पकालिक जोखिमों से बचें।

कर्क राशि सामाजिक संबंधों या साझेदारी के माध्यम से आज आर्थिक लाभ की संभावना है। वृषभ राशि के ग्यारहवें भाव में शुक्रदेव आपकी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे। ध्यान रहे कि केवल दूसरों की राय पर भरोसा करके कोई फैसला न लें। संयुक्त वित्तीय को बहुत सावधानी से संभालें। संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं और जोखिम लेने से बचें। तभी आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी।

सिंह राशि आर्थिक स्थिरता बनी रहेगी, लेकिन स्वास्थ्य या दैनिक जरूरत पर खर्च हो सकता है। शुक्रदेव करियर के माध्यम से एक स्थिर आय का समर्थन कर रहे हैं। सोशल नेटवर्क से धन लाभ के योग बन रहे हैं। अपने बजट की योजना सावधानी से बनाएं और जल्दबाजी में कोई खरीदारी न करें।

कन्या राशि आर्थिक स्थिति स्थिर बनी हुई है। आप शिक्षा या लंबी अवधि के लाभ से जुड़े निवेश पर विचार कर सकते हैं। सट्टेबाजी से बचें, क्योंकि पांचवा भाव अनिश्चितता पैदा कर सकता है। किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह आपको बेहतर निर्णय लेने में मदद करेगी। अपनी वित्तीय योजना सावधानी से बनाए। लगातार लाभ उठाने के लिए अपनी योजनाओं पर टिके रहें।

तुला राशि संपत्ति या घर से जुड़े आर्थिक मामलों पर आज चर्चा हो सकती है। आप लंबी अवधि के निवेश की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। अचानक लिए जाने वाले वित्तीय फैसले से बचें। शुक्रदेव संयुक्त वित्तीय को सावधानी से संभालने का संकेत दे रहे हैं। प्रैक्टिकल योजना से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

वृश्चिक राशि वित्तीय मामलें आज स्थिर बने रहेंगे। आप छोटे लाभ या कम समय की प्लानिंग पर ध्यान दे सकते हैं। जोखिम भरे निवेश से परहेज करें, क्योंकि आठवें भाव में बृहस्पतिदेव का प्रभाव कुछ अनिश्चितता ला सकता है। संचार या लेखन से जुड़े कार्यों से धन लाभ जरूर संभव है। अपने खर्चों की योजना सावधानी से बनाएं और आवेगपूर्ण खर्च से बचें। समझदारी से किया गया वित्तीय प्रबंधन ही आपको लाभ देगा।

धनु राशि वित्तीय योजना और बचत के लिए आज का दिन उत्तम है। मकर राशि के दूसरे भाव में चंद्रमा की उपस्थिति धन प्रबंधन में अनुशासन की मांग कर रही है। जल्दबाजी में पैसे खर्च करने की आदत पर लगाम लगायें। तेजी से लाभ के बजाय लंबी अवधि के निवेश पर भरोसा करें। परिवार से जुड़े कुछ खर्चें सामने आ सकते हैं, इसलिए पहले से तैयार रहें। धैर्य और बुद्धिमानी से लिए गए फैसले ही आपको मजबूती देंगे।

मकर राशि आप वित्तीय मामलों को संतुलित रखेंगे। आज लंबी अवधि वाले निवेश पर विचार कर सकते हैं। अचानक होने वाले खर्चों से बचना समझदारी होगी। आपकी प्रैक्टिकल सोच धन प्रबंधन में मदद करेगी। निरंतर प्रयासों से धन प्राप्ति के संकेत मिल रहे हैं। अपनी आर्थिक स्थिति को और बेहतर बनाने के लिए स्थिरता पर ध्यान दें और अनावश्यक जोखिम न लें।

कुंभ राशि आज आपके वित्तीय मामलों में विशेष सावधानी की जरूरत है। अचानक खर्च बढ़ सकता है, जो आपके बजट को प्रभावित करेंगे। निवेश के मामलों में जल्दबाजी ना दिखाएं। मीन राशि के दूसरे भाव में मंगलदेव और शनिदेव धन के मामलों में कड़े अनुशासन का संकेत दे रहे हैं। किसी भी तरह के वित्तीय जोखिम से आज दूर रहें। सतर्क योजना से स्थिरता मिलेगी।

मीन राशि आर्थिक मामलों पर आज गहराई से ध्यान देने की जरूरत है। मेष राशि के दूसरे भाव में सूर्यदेव और अस्त बुधदेव पैसों के लेन-देन में सावधानी बरतने का संकेत दे रहे हैं। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें और बजट बनाकर चलें। नेटवर्किंग के माध्यम से लाभ संभव है, पर स्पष्टता जरूरी है। आपका फोकस लंबी अवधि की स्थिरता पर होना चाहिए।

मेहनत के बाद भी नहीं मिल रहा नेम फेम ? वास्तु गुरु से जानें सफलता पाने की टिप्स

आज के जमाने में हर किसी व्यक्ति की इच्छा होती है कि वह जीवन में बहुत लोकप्रियता हासिल करें और उन्हें खून मान सम्मान मिले। इसके लिए लोग अपने करियर में काफी मेहनत भी करते हैं। लेकिन, कई बार व्यक्ति जितनी मेहनत करता है लेकिन, उसे अपनी मेहनत का फल नहीं मिल पाता है। हालांकि, ऐसा जरूरी नहीं है कि हमेशा आपकी मेहनत में ही कोई कमी है ऐसा कई बार घर के वास्तु के कारण भी हो सकता है। घर में वास्तु की जुड़ी गलतियां व्यक्ति को लोकप्रियता हासिल नहीं करने देती हैं। आइए जानते हैं वास्तु गुरु मान्या से नेम फेम पाने के लिए वास्तु से जुड़ी किन बातों का ख्याल रखना चाहिए। वास्तु गुरु से जानें सफलता और लोकप्रियता पाने की वास्तु टिप्स वास्तु गुरु के अनुसार, लोकप्रियता (नेम फेम) पाने के लिए बेहद जरूरी है कि आपके घर की दक्षिण दिशा सही हो। इस दिशा को नेम फेम की दिशा कहा जाता है। अगर आप घर से काम करते हैं यानी फर्म फ्रॉम होम करते हैं तो अपने वर्क स्टेशन को इस दिशा में रखें। इसके अलावा अपने काम के लिए आपको दो भी सर्टिफिकेट या अवार्ड मिले हों उन्हें भी इस दिशा में ही रखें। कार्यस्थल पर अगर आपके काम

के लिए आपको सराहना नहीं मिल रही है तो अपने घर से इस दिशा को ठीक करें। वास्तु गुरु के अनुसार, दक्षिण दिशा अगर वास्तु सहित होगी तभी आपको सफलता मिलेगी। इसलिए इस बात का विशेष तौर पर ख्याल रखें की आपके घर की दक्षिण दिशा में कोई वास्तु दोष न हो। वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर की दक्षिण दिशा में आप चाहे तो लाल या गुलाबी रंग करवा सकते हैं। क्योंकि, यह रंग आपको अपने कार्य को पूरा करने की क्षमता देगा। अगर किसी विशिष्ट क्षेत्र में आप सफलता पाना चाहते हैं तो अपने घर की इस दिशा में पीला रंग कराएं। इस बार का ख्याल रखें कि इस दिशा में पानी से संबंधित कोई डेकोरेटिव आइटम नहीं होना चाहिए। न ही इस दिशा में काला और नीला रंग हो। करियर में सफलता और शोहरत पाने के लिए दक्षिण दिशा में आप दौड़ते हुए घोड़े की तस्वीर लगा सकते हैं। इसके अलावा यहां पर आप त्रिकोण के आकार वाले पौधे भी लगा सकते हैं। अगर आपके घर का एंट्री दक्षिण दिशा की तरफ है तो यह आपके लिए सफलता दिलाने वाला साबित होगा। वास्तु से जुड़ी इन छोटी छोटी बातों का ख्याल रखकर आप अपनी मेहनत का फल हासिल कर सकते हैं।

घर-घर दस्तक दे रही जनगणना विकास की नई तस्वीर गढ़ने में जुटा प्रशासन

समयसीमा में कार्य पूर्ण करने पर प्रगणकों का सम्मान, सटीक आंकड़ों से तय होगी भविष्य की योजनाओं की दिशा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सारनी।नगर पालिका परिषद सारनी क्षेत्र में जनगणना 2026-27 का कार्य अब तेजी पकड़ चुका है।शहर के हर गली-मोहल्ले और घर तक पहुंचकर सुपरवाइजर एवं प्रगणक मकान सूचीकरण का कार्य पूरी जिम्मेदारी और सजगता के साथ कर रहे हैं।यह प्रक्रिया केवल आंकड़े जुटाने तक सीमित नहीं है,बल्कि आने वाले वर्षों की विकास योजनाओं की मजबूत नींव भी तैयार कर रही है।भारत सरकार के निर्देशानुसार कलेक्टर डॉ.सौरभ संजय सोनवणे के निर्देशन में नगर पालिका क्षेत्र में जनगणना 2026-27 के प्रथम चरण के अंतर्गत मकान सूचीकरण एवं नजरी नक्शा तैयार करने का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में गुरुवार शाम नगर पालिका सभाकक्ष में मुख्य नगर पालिका अधिकारी एवं चार्ज अधिकारी सी.के.मेश्राम ने सुपरवाइजरों और प्रगणकों की समीक्षा बैठक ली।बैठक में ब्लॉकवार कार्य प्रगति की समीक्षा करते हुए चार्ज अधिकारी ने निर्देश दिए कि प्रत्येक प्रगणक प्रतिदिन निर्धारित लक्ष्य के अनुसार कार्य करें तथा हर घर की जानकारी पूरी सावधानी और शुद्धता के साथ दर्ज करें। उन्होंने कहा कि जनगणना केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं,बल्कि समाज और शासन के बीच भरोसे का दस्तावेज है।सही आंकड़े ही भविष्य में सड़क,पानी, स्वास्थ्य,शिक्षा और अन्य मूलभूत सुविधाओं की योजनाओं को दिशा देंगे। बैठक के दौरान उन प्रगणकों को सम्मानित भी किया गया जिन्होंने समयसीमा से पहले मकान सूचीकरण एवं नजरी नक्शा का कार्य पूर्ण कर उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। सम्मानित होने वालों में स्वाती गौतम,दीपक मोहबे,सरिता कापसे, रामकिशोर भलावी,ब्रजेश बामने,सुनील चौधरी और मनोज सागर शामिल रहे।

चार्ज अधिकारी ने कहा कि कार्य पूर्ण होने के बाद भी सभी प्रगणक अपने-अपने सुपरवाइजरों के संपर्क में बने रहेंगे,ताकि आवश्यकता पड़ने पर अन्य कर्मचारियों को मार्गदर्शन मिल सके और जनगणना कार्य सुचारु रूप से संपन्न हो।बैठक में उपयंत्री कमलेश पटेल सहित नगर पालिका के प्रगणक एवं संबंधित कर्मचारी उपस्थित रहे।जनगणना का यह अभियान प्रशासन और आमजन के सहयोग से आगे बढ़ रहा है,जहां हर घर की जानकारी आने वाले कल की योजनाओं का आधार बन रही है।

9 मई को लगेगी नेशनल लोक अदालत

करदाताओं को मिलेगा राहत का अवसर,बकाया राशि जमा करने पर शासन अनुसार दी जाएगी छूट

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका परिषद सारनी में आगामी 09 मई को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। नगर पालिका प्रशासन द्वारा आयोजित इस विशेष लोक अदालत का उद्देश्य नागरिकों को कर संबंधी बकाया राशि जमा करने में सुविधा प्रदान करना एवं शासन की योजनाओं के तहत राहत उपलब्ध कराना है।मुख्य नगर पालिका अधिकारी सी के मेश्राम ने जानकारी देते हुए बताया कि नेशनल लोक अदालत का आयोजन सुबह 11 बजे से सायं 4 बजे तक नगर पालिका परिषद परिसर में किया जाएगा। इस दौरान नागरिक संपत्तिकर,समेकित कर,शिक्षा उपकर,विकास उपकर एवं जलकर की चालू तथा बकाया राशि जमा कर सकेंगे।उन्होंने बताया कि लोक अदालत में कर जमा करने वाले बकायादारों को शासन के नियमानुसार विशेष छूट एवं राहत का लाभ भी प्रदान किया जाएगा।इससे न केवल नागरिकों को आर्थिक राहत मिलेगी,बल्कि नगर पालिका के राजस्व में भी वृद्धि होगी,जिससे शहर के विकास कार्यों को गति मिल सकेगी।नगर पालिका प्रशासन ने शहरवासियों से अपील की है कि वे इस अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाते हुए अपने लंबित करों का भुगतान करें और अनावश्यक ब्याज एवं दंड से बचें।प्रशासन का मानना है कि समय पर कर जमा करना एक जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है,जिससे शहर की मूलभूत सुविधाओं और विकास योजनाओं को मजबूती मिलती है।

स्वाद के शोर में दबती सड़क की सांसें आखिर कब जागेगा जिम्मेदार तंत्र

मिनी स्टेट हाईवे पर बेतरतीब वाहनों से मंडरा रहा हादसों का खतरा,जनहित की अनदेखी पर उठ रहे सवाल क्या बड़ी दुर्घटना के बाद ही होगा समाधान

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

सारनी नगर पालिका परिषद के महावीर स्वामी वार्ड क्रमांक 36 स्थित हवाई पट्टी के समीप संचालित जुहू चौपाटी आज लोगों के स्वाद और मनोरंजन का केंद्र जरूर बन चुकी है,लेकिन इसके साथ ही यह क्षेत्र अब दुर्घटनाओं के बढ़ते खतरे का पर्याय भी बनता जा रहा है। बैतूल के कमानी गेट से परासिया तक जाने वाले इस मिनी स्टेट हाईवे मार्ग पर शाम ढलते ही दोपहिया और चारपहिया वाहनों की लंबी कतारें लग जाती हैं। सड़क किनारे खड़े वाहनों के कारण आवागमन प्रभावित हो रहा है और रात्रिकालीन समय में किसी भी बड़े हादसे की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।बताया जाता है कि पूर्व में यह जुहू चौपाटी वन विभाग की हवाई पट्टी परिसर में संचालित होती थी,लेकिन वन भूमि से जुड़े नियमों के चलते इसे मुख्य सड़क किनारे स्थानांतरित कर दिया गया। इसके बाद से स्थिति और अधिक चिंताजनक बन गई है।प्रतिदिन शाम 6 बजे से रात 10 बजे तक सड़क पर ऐसा दृश्य निर्मित होता है मानो हाईवे नहीं बल्कि अस्थायी पार्किंग स्थल हो। तेज रफ्तार वाहनों और सड़क पर अचानक रुकते लोगों के बीच दुर्घटना का खतरा लगातार बढ़ रहा है।

विडंबना यह है कि एक ओर नगर पालिका परिषद और वन विभाग नियमों का हवाला देकर स्थायी व्यवस्था बनाने से बचते दिखाई देते हैं,वहीं दूसरी ओर चौपाटी में संचालित दुकानों से टैक्स वसूली निरंतर जारी है।यह स्थिति प्रशासनिक संवेदनहीनता और जनहित की अनदेखी को उजागर करती है।जिले की सबसे बड़ी नगर पालिका होने के बाद भी सारनी में मूलभूत व्यवस्थाओं का अभाव आमजन के लिए चिंता का विषय बन चुका है।

जनहित को सर्वोपरि रखते हुए अब केवल चर्चा नहीं बल्कि ठोस पहल की आवश्यकता है।बैतूल नगर पालिका द्वारा नेहरू पार्क के समीप विकसित किए गए व्यवस्थित जुहू चौपाटी मॉडल की तर्ज पर सारनी में भी स्थायी फूड जोन विकसित किया जा सकता है।वन विभाग और नगर पालिका के संयुक्त प्रयास से वैकल्पिक भूमि चिन्हित कर दुकानदारों के लिए व्यवस्थित दुकानें,पार्किंग स्थल और सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराई जानी चाहिए।जुहू चौपाटी क्षेत्र के लिए अलग पार्किंग जोन विकसित किया जाए।हाईवे किनारे नो पार्किंग और रिफ्लेक्टर युक्त सुरक्षा संकेतक लगाए जाएं। शाम के समय यातायात नियंत्रण के लिए विशेष ट्रैफिक व्यवस्था लागू की जाए।नगर पालिका,वन विभाग और व्यापारियों की संयुक्त समिति बनाकर स्थायी समाधान निकाला जाए।स्थानीय युवाओं को रोजगार से जोड़ते हुए स्मार्ट फूड स्ट्रीट मॉडल विकसित किया जाए,जिससे पर्यटन और व्यापार दोनों को बढ़ावा मिले।यदि समय रहते प्रशासन ने गंभीरता नहीं दिखाई तो स्वाद का यह बाजार किसी दिन मातम का कारण भी बन सकता है।अब प्रश्न यह नहीं कि समस्या है या नहीं,बल्कि यह है कि जिम्मेदार तंत्र समाधान चाहता है या फिर किसी बड़ी दुर्घटना के बाद जागने की प्रतीक्षा कर रहा है। यह प्रश्न सबसे विचारणीय अंगद की पाव की तरह जमकर प्रशासन का मजाक उड़ाता दिखाई दे रहा है।

खेलों से निखरेगा बच्चों का भविष्य,सारनी में शुरू हुआ निशुल्क ग्रीष्मकालीन खेल शिविर

फुटबॉल से लेकर कबड्डी तक मिलेगा प्रशिक्षण, 6 से 25 वर्ष तक के खिलाड़ी उठा सकेंगे लाभ

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

गर्मी की छुट्टियों को बच्चों और युवाओं के लिए उपयोगी बनाने की दिशा में उत्कृष्ट स्पोर्ट्स क्लब सारनी द्वारा हाई स्कूल फुटबॉल ग्राउंड में निशुल्क ग्रीष्मकालीन खेल शिविर की शुरुआत की गई है। खेल एवं युवक कल्याण विभाग बैतूल के मार्गदर्शन में आयोजित इस शिविर का उद्देश्य क्षेत्र के बच्चों और खिलाड़ियों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करना तथा उनकी प्रतिभा को नई पहचान देना है।

प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले इस शिविर में इस बार भी बड़ी संख्या में खिलाड़ी बच्चों के शामिल होने की उम्मीद जताई जा रही है।शिविर के कोच प्रशिक्षक रंजीत डोंगरे एवं रामा पवार ने बताया कि कई वर्षों से निरंतर इस शिविर का आयोजन किया जा रहा है,ताकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बच्चों को बिना किसी शुल्क के बेहतर खेल प्रशिक्षण मिल सके।शिविर में फुटबॉल,वॉलीबॉल,कबड्डी, खो-खो सहित अन्य खेलों की बारीकियों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। खिलाड़ियों को खेल के नियम,तकनीक, फिटनेस,अनुशासन और टीम भावना की जानकारी भी दी जाएगी। प्रशिक्षकों का कहना है कि खेल केवल शरीर को मजबूत नहीं बनाते,बल्कि बच्चों के मानसिक और बौद्धिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

खेल एवं युवक कल्याण विभाग बैतूल की जिला खेल अधिकारी पूजा कुरील तथा घोड़ाडोंगरी ब्लॉक कॉर्डिनेटर शैलेन्द्र शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में भाग लेने वाले खिलाड़ियों का ऑनलाइन पंजीयन किया जा रहा है। 6 वर्ष से लेकर 25 वर्ष तक के खिलाड़ी बच्चे इस निशुल्क शिविर में शामिल होकर सुबह और शाम दोनों समय प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। आयोजकों ने सारनी नगर सहित आसपास के क्षेत्रों के अभिभावकों से अपील की है कि वे अपने बच्चों को मोबाइल और टीवी की दुनिया से निकालकर खेल मैदान तक जरूर पहुंचाएं। खेलों से बच्चों में आत्मविश्वास,अनुशासन और बेहतर स्वास्थ्य का विकास होता है,जो उनके उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव बन सकता है।शिविर के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आगे जिला एवं राज्य स्तर तक पहुंचाने का प्रयास भी किया जाएगा।यही कारण है कि यह समर कैंप बच्चों के लिए केवल खेल सीखने का अवसर नहीं,बल्कि अपने सपनों को नई उड़ान देने का मंच भी बनता जा रहा है।

भीषण गर्मी में राहत का संकल्प

पंचमुखी हनुमान दादा दरबार में राहगीरों और ग्रामीणों के लिए शुरू हुई शीतल पेयजल सेवा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

भीषण गर्मी के दौर में जहां एक ओर तापमान लगातार बढ़ रहा है,वहीं दूसरी ओर ग्राम पंचायत सलैया के बस स्टॉप स्थित पंचमुखी हनुमान दादा दरबार में मानव सेवा की मिसाल पेश की गई है।मंदिर परिसर में आमजन,राहगीरों एवं ग्रामीणों के लिए शुद्ध एवं शीतल पेयजल की विशेष व्यवस्था प्रारंभ की गई है, जिससे प्रतिदिन मुख्य मार्ग से गुजरने वाले लोगों को गर्मी से राहत मिल सके। ग्राम पंचायत सलैया के बस स्टॉप के समीप स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर, श्रीराम दरबार एवं भगवान गणेश मंदिर क्षेत्र आस्था का प्रमुख केंद्र है।यहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु, ग्रामीण और यात्री पहुंचते हैं। लंबे समय से क्षेत्र में पेयजल सुविधा का अभाव महसूस किया जा रहा था,जिसे ध्यान में रखते हुए मंदिर संचालक एकराज यादव द्वारा गुरुवार से शीतल जल सेवा प्रारंभ की गई।मंदिर संचालक एकराज यादव ने बताया कि भीषण गर्मी में राहगीरों को सबसे अधिक आवश्यकता स्वच्छ और ठंडे पेयजल की होती है।इसी उद्देश्य से मंदिर परिसर में ऐसी व्यवस्था की गई है ताकि यहां से गुजरने वाला हर व्यक्ति बिना किसी संकोच के शीतल जल ग्रहण कर सके और राहत महसूस करे।उन्होंने कहा कि जल सेवा केवल सुविधा नहीं बल्कि पुण्य और मानवता का कार्य है।गर्मी के मौसम में शरीर में पानी की कमी से कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।ऐसे समय में सार्वजनिक स्थानों पर पेयजल व्यवस्था लोगों के लिए जीवनदायिनी साबित होती है।विशेषज्ञों के अनुसार मई-जून के महीनों में तापमान बढ़ने के साथ ही डिहाइड्रेशन,चक्कर आना और लू लगने जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ती हैं।ऐसे में बस स्टैंड,मंदिर,बाजार और मुख्य मार्गों पर शीतल पेयजल की व्यवस्था अत्यंत आवश्यक मानी जाती है।सामाजिक संगठनों एवं नागरिकों को भी आगे आकर सार्वजनिक स्थानों पर प्याऊ,मटका जल सेवा और छायादार विश्राम स्थलों की व्यवस्था करनी चाहिए।मंदिर परिसर में शुरू की गई यह पहल केवल पेयजल उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है,बल्कि यह जल संरक्षण और जनसेवा का संदेश भी दे रही है।लोगों से अपील की गई है कि पानी का उपयोग आवश्यकतानुसार करें तथा सार्वजनिक पेयजल व्यवस्था को स्वच्छ बनाए रखने में सहयोग करें।ग्रामीणों एवं राहगीरों ने इस सराहनीय पहल की प्रशंसा करते हुए कहा कि भीषण गर्मी में इस प्रकार की व्यवस्थाएं लोगों को राहत पहुंचाने के साथ समाज में सेवा भावना को भी मजबूत करती हैं।

राख की पीड़ा के बीच मानवता की मिसाल विद्यार्थियों ने बढ़ाया मदद का हाथ

बर्राढाना आगजनी पीड़ितों के लिए महाविद्यालय परिवार बना सहारा,वस्त्र और जरूरी सामग्री पहुंचाकर दिया संवेदनाओं का संदेश

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

भीमपुर ब्लॉक के बर्राढाना गांव में तीन मई को हुई भीषण आगजनी की घटना ने जहां कई परिवारों की जिंदगी को पलभर में राख में तब्दील कर दिया, वहीं इस दुखद घड़ी में मानवता और सामाजिक सरोकार की एक प्रेरणादायी तस्वीर भी सामने आई है। बगडोना स्थित वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सरदार विष्णुसिंह उईके शासकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं स्टाफ ने आग से प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए आगे बढ़कर संवेदनशीलता और सामाजिक दायित्व का परिचय दिया।महाविद्यालय परिवार द्वारा विद्यार्थियों और समाज के सहयोग से पीड़ित परिवारों के लिए वस्त्र,दैनिक उपयोग की सामग्री एवं अन्य जरूरी सामान एकत्रित कर गांव पहुंचाया गया। बच्चों के लिए 60 जोड़ी नए कपड़े भी वितरित किए गए,जिससे आगजनी से प्रभावित मासूमों के चेहरों पर राहत की हल्की मुस्कान दिखाई दी।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रदीप पंद्राम ने बताया कि विद्यार्थी कल्याण राष्ट्रीय टास्क फोर्स(एनटीएफ) के मानसिक स्वास्थ्य एवं विद्यार्थी कल्याण काउंसलर अनिल कुमार तुमड़ाम, गोलमन अहाके,राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक अमन कश्यप,उत्तम साहू और राकेश भाटिया के नेतृत्व में राहत सामग्री वितरित की गई।उन्होंने कहा कि यह केवल सहायता अभियान नहीं,बल्कि मानवता के प्रति समर्पण और सामाजिक एकजुटता का जीवंत उदाहरण है।उन्होंने बताया कि महाविद्यालय स्टाफ ने अपनी स्वेच्छा से सहयोग राशि और सामग्री एकत्रित की गई जिसके बाद राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक भी इस अभियान से जुड़ते चले गए। इस पूरे प्रयास ने यह साबित

कर दिया कि कठिन परिस्थितियों में समाज यदि एकजुट हो जाए तो पीड़ित परिवारों को नया संबल मिल सकता है। बर्राढाना गांव में तेज आंधी-तूफान के दौरान लगी आग ने कुछ ही देर में विकराल रूप धारण कर लिया था।इस हादसे में 22 से अधिक मकान जलकर खाक हो गए थे तथा 100 से अधिक लोग बेघर हो गए। कई परिवारों के पास केवल तन पर पहने कपड़े ही बच पाए। आग की चपेट में आने से घरेलू सामान,अनाज, मोटरसाइकिलें और गैस सिलेंडर भी नष्ट हो गए, जबकि कई मवेशियों की दर्दनाक मौत हो गई थी।

इस अवसर पर हरिश लोखण्डे,अंजना संजय राठौर,दीपक कुमार मानकर, दसरू यदुवंशी,मनोज नागले, शैलेश श्रीवास्तव,कविता धोटे,अनुज हलदार,मोहन पवार,सविता पटेल,निकिता सोनी,प्रियंका दवण्डे,दिनकर लिखितकर,अनिल तुमड़ाम, राजेश हनोते,दिपिका सोनी, अर्चना महाले,रीना उइके, लक्ष्मी नागले,गंगा चौरे,उत्तम साहू,अनिता नागले सहित महाविद्यालय का समस्त स्टाफ एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आगजनी जैसी आपदा के बाद जनसहयोग क्यों जरूरी

विशेषज्ञों के अनुसार आगजनी की घटनाओं के बाद पीड़ित परिवारों को केवल आर्थिक सहायता ही नहीं,बल्कि मानसिक और सामाजिक सहयोग की भी आवश्यकता होती है। ऐसे समय में समाज को आगे आकर कपड़े,भोजन, दवाइयां,अस्थायी आवास, बच्चों के लिए अध्ययन सामग्री तथा मवेशियों के चारे जैसी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करनी चाहिए। सामूहिक सहयोग पीड़ित परिवारों को दोबारा जीवन की मुख्यधारा में लौटने का हौसला देता है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949